CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन रथयात्रा देहली का इतिहास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संस्थान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन रथयात्रा देहली का इतिहास

और

इन्तज़ाम नामा बरामद रथ सरावगियान

❀=❀

संयोजक

पन्नालाल जैन अग्रवाल

३८७२, चर्खेवालान, दिल्ली

इतिहास अनुवादक

बाबू माईदयाल जैन

बी० ए० (आनर्स), बी० टी०

❀=❀

प्रकाशक

जैन साहित्य सदन

लाल मन्दिर, चाँदनी चौक,

दिल्ली—६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक
जैन साहित्य सदन
लाल मन्दिर, चाँदनी चौंक,
दिल्ली—६

प्रथम संस्करण 1000
जून, १९६३

Composed By :
Modern Composing and Printing Agency,
Near Jagat Cinema, DELHI—6.

Printed By :
Rising Sun Press, Chitla Gate,
Chawri Bazar, DELHI—6.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रन्थाऽनुक्रम

संख्या	विषय	पृष्ठ
१	दो शब्द	क-ङ
२	नम्र निवेदन	च-छ
३	धन्यवाद	ज
४	रथ यात्रा कैसे बन्द हुई	१
५	रथयात्रा फिर कैसे हुई	६
६	रथ यात्रा में सहयोग तथा सरकारी पेशबन्दी	१५
७	लैफ्टिनैंट गवरनर का निर्णय	२०
८	रथ यात्रा का समारोह	२७
९	इन्तज़ाम नामा बरामद रथ सरावगियान	३७
१०	इन्तज़ाम नामा बरामद रथ सरावगियान १८७७ का सार	६७

दि. जैन (शोध) संस्थान
पुस्तक सं०.................
दिनांक.................

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दो शब्द

सन् १९२२ की बात है कि मैं जैन महासभा के लखनऊ अधिवेशन में गया था। स्वर्गीय बैरिस्टर चम्पतराय जी उसका सभापतित्व कर रहे थे। वह माह सुदी पंचमी का दिन था। उस दिन वहां जैन रथयात्रा भी निकली थी। बाजार के अजैन दुकानदार भाइयों ने रथयात्रा के निकलने के समय जब तक रथयात्रा वहां से न गुजरी दुकानें वन्द रखीं और उसके निकल जाने के पश्चात् दुकानें खोली। यह उनका विरोध या असन्मान प्रदर्शन था। इससे मुझे खेद हुआ और मेरे मन में विचार आया कि आजकल के जागृत युग में जब यह हाल है तो कोई समय ऐसा हुआ होगा कि जब जैन रथयात्रा का खुले रूप विरोध हुआ हो, या भविष्य में उसका विरोध हो। अतः मैंने जैन समाचार पत्रों में एक सूचना इस आशय की प्रकाशित की कि जिन भाईयों के पास रथयात्रा सम्बन्धी ऐतिहासिक महत्त्व के कागज़ात हों उन्हें मेरे पास भेजने की कृपा करें, क्योंकि मैंने सुना था कि देहली, खुर्जा, हाथरस आदि स्थानों पर रोक लगाने पर मामला साहब लफ़्टीनेन्ट गवर्नर बहादुर पंजाब, व लफ़्टीनेन्ट गवर्नर उत्तर प्रदेश तक पहुँचा था। खेद है कि मेरी उस सूचना पर जैन बन्धुओं ने कोई ध्यान नहीं दिया। प्रथम पं० रूपचन्द जी गार्गीय जैन पानीपत निवासी ने पानीपत रथयात्रा सम्बन्धीं २१-३-१९१४ के हुक्म, साहब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट करनाल के निर्णय की प्रति लिपि (नक्ल) भेजी, जिसमें रथयात्रा के समय मुसलमानों के साथ रास्ते का झगड़ा होकर सरावगियों के हक़ में तय हुआ था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर इस दिशा में देहली में मेरे प्रयत्न करने पर कुछ कागज़ात स्वर्गीय रायबहादुर ला० पारसदास जी के यहां से, कुछ ला० जैनीलाल खिलौने वालों के पास से और एक हस्त लिखित उर्दू पुस्तक स्वर्गीय ला० भोलानाथ जी प्रज्ञाचक्षु के पोते ला० ताराचन्द जी से प्राप्त हुई। यह पुस्तक दिल्ली के उस जैन रथयात्रा का इतिहास थी, जो २० जुलाई सन् १८७७ तदनुसार आसाढ़ सुदी दसमी दिन शुक्रवार संवत १९३४ को साहब लफ़्टीनेन्ट बहादुर पंजाब ता० २२-५-१८७७ के निर्णय अनुसार हुई थी। सन् १८७७ वाले हुक्म, साहब लफ़्टीनेन्ट गवर्नर बहादुर पंजाब से यह विदित है कि यह रथयात्रा सन् १८१०, १८३४, १८६३ आदि में भी होती रही है। पुस्तक पर किसी लेखक का नाम नहीं है और प्रयत्न करने पर भी लेखक के नाम का पता न लग सका। पुस्तक उर्दू सुलेख में है, ऐतिहासिक महत्त्व की है अब जीर्ण अवस्था में हैं और हाल में इसका जीर्णोद्वार कराया गया है, जिससे वह अब बहुत वर्षों के लिए सुरक्षित हो गई है। उसके प्रथम व द्वितीय पृष्ठ के फ़ोटो दिए जा रहे हैं।

मैंने उक्त पुस्तक का देवनागरी लिपि में रूपान्तर करके पं० कैलाशचन्द्र जी जैन शास्त्री, संपादक जैन सन्देश वाराणसी के पास भेजा था। उन्होंने उसे पसन्द किया और उसका सारांश जैन सन्देश साप्ताहिक ता० २३-७-१९५९, १३-८-५९, २७-८-५९, ३-९-५९, २४-९-५९ के पांच अंकों में क्रमशः प्रकाशित किया।

इस पुस्तक के अनुवाद को प्रकाशित करने के पक्ष तथा विपक्ष में मत थे, परन्तु द्वेष भाव को बढ़ाने के विचार से नहीं बल्कि उसके ऐतिहासिक महत्त्व को दृष्टि में रख कर इसको प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। इसके अतिरिक्त जब इस पुस्तक में जैनों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथा अजैनों के दोनों पक्षों में मेल और सद्भाव के साथ मामले का अन्त दिखलाया गया है, जिससे अन्त को सद्भाव ही बढ़ेगा।

उर्दू तथा हिन्दी भाषाओं का जानकार कोई विद्वान इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद करने को तैयार न होने पर कुछ निराशा हुई। पर अन्त में श्रीयुत बा० माईदयाल जी जैन बी० ए० (आनर्स) बी० टी० दिल्ली ने पुस्तक के ऐतिहासिक महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए उसका हिन्दी में अनुवाद करना स्वीकार कर लिया। यह अनुवाद उन्हीं के द्वारा किया गया है।

उपरोक्त पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद तैयार होने पर स्वर्गीय राय बहादुर ला० पारसदास जी के निजि पुस्तकालय से जो (भारत-वर्षीय अनाथ रक्षक सोसाईटी, दरियागंज देहली) एक और मुद्रित उर्दू छन्द वद्ध पुस्तक मिली, जिसका नाम 'इन्तज़ामनामा बरामद रथ सरावगियान' है, जिसके लेखक सैयद फ़ज़ल हुसैन तरन्दी साढोरवीं डिप्टी इन्स्पैक्टर प्रथम श्रेणी स्टेशन नम्बरचार देहली हैं जो उन्होंने बहुक्म मिस्टर राटन साहब असिस्टैन्ट डिस्ट्रिक्ट सुपरिटैन्डन्ट पुलिस देहली लिखी थी। पुस्तक लिखने के समय वे पुलिस विभाग में बत्तीस वर्ष नौकरी कर चुके थे। इस पुस्तक में पांच सौ पांच (५०५) शेर हैं और अन्त में सात शेरों में पुस्तक लिखने की तारीख सन् १८७७ दी है। और वह फैज आम प्रेस देहली की छपी हुई है। यह पुस्तक भी बड़े ऐतिहासिक महत्त्व की है, क्योंकि उसी समय (सितम्बर १८७७) की मुद्रित है। और इससे पहली पुस्तक में वर्णित तथ्यों का समर्थन होता है। इसका देवनागरिक लिपि में रूपान्तर मैंने, और सार बाबू दीपचन्द जी संपादक वर्धमान व बाबू महावीर प्रसाद जी एडवोकेट देहली ने किया है। इन दोनों पुस्तकों को एक साथ प्रकाशित किया जा रहा है, जिससे जनता इससे लाभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठा सके और दो ऐतिहासिक रचनाओं की रक्षा हो सके।

इन्तज़ाम नामा के कवर का फोटो भी साथ में दिया जा रहा है।

फोटू की प्राप्ति

इस पुस्तक में रथयात्रा के दो फोटू दिए जा रहे हैं उनमें से एक चित्र जो कि दरीबाकलां के सामने (चाँदनी चौंक) से गुज़रने वाले जलूस से सम्बन्ध रखता है। वह ला० जोतीप्रसाद जी किरांची वालों के घर से प्राप्त हुआ है जिनकी अवस्था इस समय ७५ वर्ष की है और वे कहते हैं कि मैं बाल अवस्था से इसे अपने यहाँ बराबर देखता चला आ रहा हूँ।

दूसरा चित्र घंटाघर के पास से गुज़रने वाले जलूस से सम्बन्ध रखता है, उसका पता अभी हाल में ला० जैनीलाल खिलौने वालों से चला और ला० रघुवीरसिंह जी कोठी वालों के प्रयत्न से चैत्यालय ला० गुलाबराय मेहरचन्द (कूंचा सुखानन्द, दरीबा) से प्राप्त हुआ ला० जैनीलाल जी की अवस्था इस समय ८० वर्ष की है। उक्त चित्र को वे बराबर अपने होश से चैत्यालय में देखते चले आ रहे हैं। उनका कहना है कि यह उसी सन् १८७७ की रथयात्रा का है और कि जूए पर ला० बल्देवसिंह साहब रईस खड़े हुए हैं। जो कि हमारी रथयात्रा निकलवाने के नायक हैं, और आपकी ही कोशिश से यह रथयात्रा का हुक्म हुआ। आप स्वर्गीय चौधरी छुट्टनलाल जी के पिता थे व देहली म्युनिस्पिल कमेटी के सभासद् सन् १८७४ से ७९ तक रहे हैं।[1]

---

[1]देखो दी हिस्ट्री आफ दिल्लीं म्युनिस्पैलिटी सन् १८६३ से १९२१ तक पृष्ठ २७-३३-३६-३८-४१, Complited by रायसहाब माधोप्रसाद।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये दोनों फोटू जिन सज्जनों से मुझे प्राप्त हुए हैं उनका मैं हृदय से आभारी हूँ। दोनों फोटू जीर्ण अवस्था में मिले हैं इनमें से प्रथम फोटू अधिक जीर्ण है। इन दोनों फोटुओं को चिरंजीव पुत्र मोतीराम गवर्मेन्ट फोटू आफीसर ने बड़े परिश्रम से साफ किया और कापियां की है। तथा हस्तलिखित उर्दू पुस्तक के दो फोटू, व 'इन्तज़ाम नामा' के कवर का फोटू भी उन्हीं के द्वारा परिश्रम से लिया गया है।

उर्दू पुस्तक 'इन्तज़ामनामा' को ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में दिया जा रहा है। मेरी इस लिपि को बा० दीपचन्द जी जैन बी० ए० संपादक वर्धमान देहली ने देख जाने की कृपा की है। इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

कागज़ात लाइसेन्स हाय पुलिस देखने से मालूम होता है कि पोह बदीदूज वाली वही रथयात्रा है जिसकी आज्ञा सन् १८७७ में मिली थी और जो सन् १८८१ से प्रतिवर्ष अब पोह बदीदूज को होती चली आ रही है।

रथयात्रा के कागज़ात व हस्तलिखित पुस्तक श्री नए मन्दिर जी धर्मपुरा देहली के शास्त्र भंण्डार में सुरक्षित रख दिए गए हैं।

पन्नालाल जैन अग्रवाल
३८७२ चरखेवालान, गली कन्हैयालाल अत्तार
देहली—६

८/२/६३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नम्र निवेदन

मुझे जब जैन रथयात्रा देहली की पुरानी उर्दू पाण्डु लिपि तथा इसकेसाथ दूसरे सरकारी तथा गैर सरकारी कागज़ात की मूल प्रतियां या प्रतिलिपियाँ दी गईं, तों उनकी जीर्ण—अवस्था को देखकर मुझे बड़ा दुख हुआ कि हमारी समाज अपनी बहुमूल्य ऐतिहासिक सामग्री की तरफ से कितनी उदासीन तथा बे-परवाह है। गत हजार डेढ़ हजार वर्षों में जैनाचार्यों, जैन मंत्रियों और जैन सेठों का सम्बन्ध भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों के हिन्दू-मुस्लिम तथा अंगरेज शासकों से रहा है और उनसे पत्र, दूसरे फरमान या राजाज्ञाएं प्राप्त की हैं। वे सब नामालूम किन शास्त्र भण्डारों या निजी अधिकार में किस अवस्था में यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। यदि उन्हें संग्रह करके उनका अध्ययन किया जाय तो उनसे मध्यकालीन तथा वर्तमानकालीन जैन इतिहास पर बड़ा प्रकाश पड़ सकता है। जिसका एक साधारण सा प्रमाण दिल्ली जैन रथयात्रा इतिहास सम्बन्धी ये दो पुस्तकें तथा दूसरे कागज़ात हैं। इस अमूल्य निधि को संग्रह करके उनकी रक्षा करना तथा उनकी फोटो-प्रतियाँ या फिल्म-प्रतियाँ तैयार कराना, उनको आधुनिक वैज्ञानिक विधियों से टिकाऊ बनाना तथा उनके विधिवत अध्ययन का प्रबन्ध करना जैन समाज का परम कर्तव्य है। देहली जैसे केन्द्रीय स्थान में एक स्थायी समिति के आधीन उनके संग्रह का सुव्यवस्थित प्रबन्ध होने की महान आवश्यकता है। मेरा अत्यन्त नम्रनिवेदन है कि जैन समाज के विचारशील शुभ-चिंतक नेता तथा विद्वान इस ओर ध्यान देने की कृपा करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैंने जैन रथयात्रा देहली के अनुवाद में प्रबन्ध सम्बन्धी सामग्री छोड़ दी है, क्योंकि उसका बहुभाग इन्तज़ाम नामा में आ गया है जिसका देवनागरी लिपि में रूपान्तर और सार इस देहली जैन रथयात्रा पुस्तक के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

माई दयाल जैन
२८/७/६२ ४५६९, डिप्टीगंज
दिल्ली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन्यवाद

ला० पन्नालाल जैन अग्रवाल ने जिस लगन तथा उत्साह से इस काम को स्वयं किया है तथा प्रेरणा करके दूसरों से कराया है उसके लिए खास तौर से धन्यवाद के पात्र हैं, क्योंकि उनकी सेवा पूर्ण तत्परता के बिना इस पुस्तक का मुद्रित रूप में प्रकाशित होना कठिन था।

धर्म प्रेमी श्रीमान् लाला रघुबीरसिंह जी जैन, जैना वाच कम्पनी देहली, ने इस पुस्तक के प्रकाशन के समस्त खर्च को दिया है। अतः जैन रथयात्रा सम्बन्धी इन दो पुस्तकों को पाठकों तक पहुँचाने का प्रधान श्रेय उन्हीं को है। इसके लिए उनका हृदय से धन्यवाद है। उनकी यह सहायता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा अनुकरणीय है।

श्रीयुत बा० माईदयाल जी जैन, व बाबू दीपचन्द जैन बी० ए० संपादक वर्धमान तथा बा० महावीर प्रशाद जी एडवोकेट ने अनुवादादि के रूप में जो सहयोग प्रदान किया और श्री मोतीराम जी जैन फोटो आफीसर जिन्होंने उदारतापूर्वक सेवा भाव से पाँच फोटो बड़े परिश्रम से तैयार किए हैं, उसके लिए उनका भी धन्यवाद है।

प्रकाशक—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

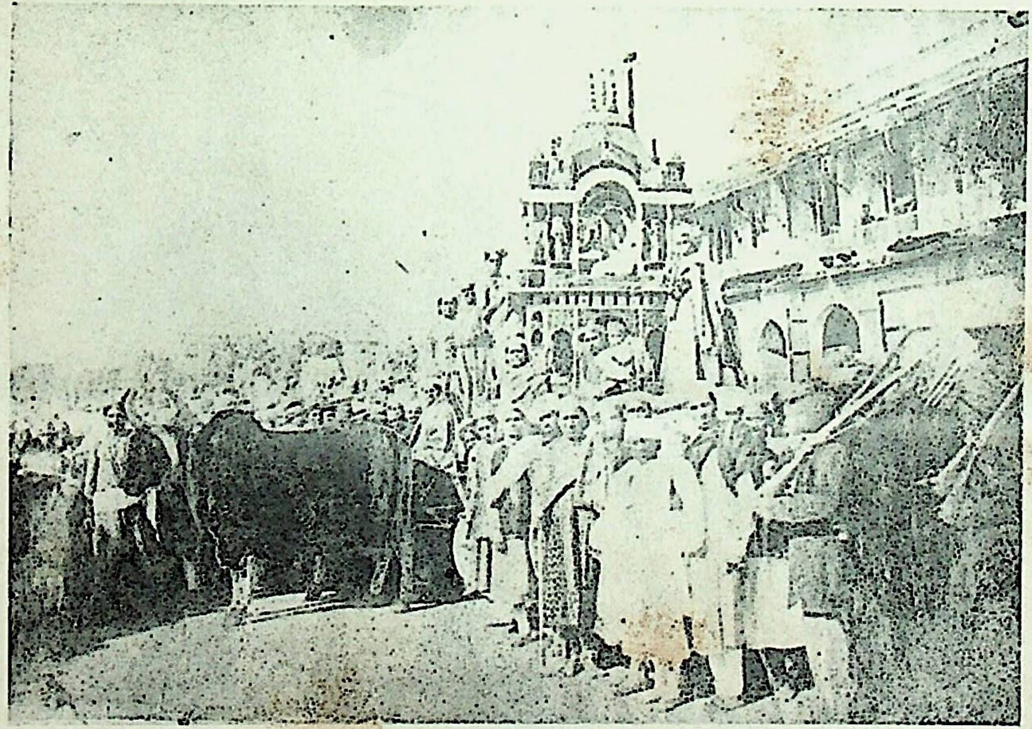

जैन रथ यात्रा दहली का जलूस दरीबा कलां के सामने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेश वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
पुस्तक सं०..................
दिनांक..................
नरिया, (का. हि. वि.) वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन रथयात्रा देहली का इतिहास

१

रथयात्रा कैसे बन्द हुई ?

यह बात सब जानते हैं, कि जैन धर्म बहुत प्राचीन है। पुराने इतिहास को देखने से यह बात प्रमाणित हो सकती है। इस धर्म या मत के अनुयायी पार्श्वनाथ जी की रथ यात्रा को अपने धर्म का अंग मानते हैं। सरावगी लोग जिन ऋषभदेव जी को देवता मानते हैं, उन्हें वैष्णव भी अपना अवतार मानते हैं। प्राचीन काल में बहुत से राजा भी जैन धर्म के अनुयायी हुए हैं। फलस्वरूप दक्षिण की तरफ करनाटक प्रान्त में मूलबद्री व जैनबद्री में जैन राजा अब भी हैं। परन्तु जब हिन्दुस्तान पर मुगलों का राज हुआ, उस समय से हिन्दुओं की स्मृद्धि न हुई और उन की उन्नति कम हो गई।

सन १८(?) में शाहजहां बादशाह ने अपने नाम पर शाहजहानाबाद बसाया और (लाल) किले के पास उर्दु बाजार बनाया तो बादशाह ने किसी विशेष व्यक्ति को जो सरावगियों की जाति में मान्य राज्य अधिकारी था, किले के नीचे जैन मन्दिर निर्माण करने की आज्ञा दी। यद्यपि यह मन्दिर अब सेना की सीमा में है और इसके आस-पास के सब मकान गिर गये हैं, फिर भी गवर्नर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जनरल हिन्द की आज्ञा से वह मन्दिर (लाल मन्दिर) आज तक स्थित है। जब यह मन्दिर तैयार हो चुका, तो सरावगियों ने रथ-यात्रा की रस्म की। इसी तरह उसके बाद भी कई वार रथयात्राएं हुई और किसी ने पूर्व कालीन बादशाहों के शासन काल में इस काम में विघ्न नहीं डाला।

जब देहली में अंगरेज सरकार का शासन हुआ, तो हर सम्प्रदाय को अपने अपने धर्म को पालने तथा रीति-रिवाज पूरा करने की पूरी-पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। चुनांचि जब सन् १८०७ में बादशाह मुहम्मद अकबर द्वितीय सिंहासन पर आरूढ थे, तब सर जार्ज मटकाफ़ की आज्ञा से देहली में सरावगियों की रथयात्रा शान्ति और निर्विघ्नता से हुई। मगर बाज़ारी मुसलमानों ने लाला हरसुखराय साहब के मन्दिर पर हमला (आक्रमण) किया। परन्तु जार्ज मटकाफ़ ने बादशाह के फरमाने से तुरन्त उसको बन्द किया और कुछ हानि न होने दी।

सन् १८३४ में इसी बादशाह के शासन काल में मिस्टर बनिफ़ साहब मैजिस्ट्रेट की सुरक्षा के प्रबन्ध से सरावगियों की रथ-यात्रा की रस्म (विधान) देहली नगर में हुई और भगवान की सवारी जयसिंह पुरा, लाहौरी दरवाज़ा, खारी बावली, चांदनी चौक व दरीबे में से होकर शान्तिपूर्वक मन्दिर में पहुँची और किसी प्रकार का दंगा फिसाद न हुआ और नगर की प्रजा में भी किसी धर्म के आदमी ने इस काम में रुकावट नहीं डाली।

सरावगियों की रथ यात्रा केवल देहली शहर विशेष में ही नहीं होती, बल्कि और स्थानों में भी होती रहती हैं, जैसे कलकत्ता में जो तमाम हिन्दुस्तान की राजधानी रही है और अंगरेजी सरकार का शासन स्थान है तथा जिसमें हर जाति व धर्म के लोग आबाद हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस शहर में विशेष रूप से नियत तिथियों में यह रथयात्रा उत्सव होता है। इसके इलावा गया व प्रयाग (जो वैष्णवों के तीर्थ हैं), अलवर, जोधपुर, जयपुर, झालरापाटन, तथा ग्वालियर इत्यादि जैसे उन शहरों में भी सरावगियों की प्रार्थना पर सरकारी प्रवन्ध से साल में दो तीन बार यह उत्सव होता है, जिन के शासक स्वयं वैष्णव हिन्दु हैं।

सन् १८५८ में जब (ईस्ट इन्डिया) कम्पनी का ठेका समाप्त हुआ और राज्य की बाग डोर और शासन महारनी विक्टोरिया के हाथ में आया, तो उस वक्त हर खास-ओ-आम के सूचनार्थ एक घोषणा की गई, कि इस राज्य में हर व्यक्ति को यह स्वतन्त्रता प्राप्त है, कि अपने अपने धार्मिक कर्तव्य तथा रीति रिवाज विना भय और ख़तरे के करे और यदि कोई व्यक्ति किसी धर्म की रस्म के वक्त किसी प्रकार की विपत्ति करे तो शाही आज्ञा से गिरफतार किया जायेगा। यह घोषणा सुन कर हर व्यक्ति को अत्यन्त प्रसन्नता और पूरी सन्तुष्टि हुई और हृदय का भय तथा बाहरी आशंका दूर हुई।

सन् १८६३ तक देहली में सरावगियों की रथ यात्रा की कोई मनाई नहीं हुई। रेवाड़ी में कई बार रथ यात्रा हो चुकी थी। मगर दूसर (भार्गव ब्राह्मण) जाति से जब कुछ आपसी मनमुटाव हुआ, तो उन्होंने रथयात्रा के वक्त आपत्ति तथा विरोध किया। जिले के अधिकारियों और कर्नल हैमिल्टन साहब भूतपूर्व कमिश्नर देहली ने दंगे के भय से उसको रोकना उचित समझा।

इस स्थान पर यह जिकर करना जरुरी है, कि इस वक्त देहली में सरावगियों और वैष्णवों में समानता, एकता और मेलजोल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

था। इस का कारण यह है कि सरावगी और वैष्णव अग्रवाल राजा उग्रसैन के वंशज हैं। इस कारण से एक दूसरे के यहाँ आना जाना, शादी-गमी और खान-पान के व्यवहार में दोनों जातियां शामिल रहें। हां, इन दोनों में इतना फर्क जरुर है, कि सरावगी जैन धर्म के अनुयायी हैं और वैष्णव विष्णु के मत को पालने वाले हैं।

सन् १८६३ तक भेद-भाव और जुदाई की कोई शकल न हुई और एक दूसरे के रीति-रिवाज पर विरोध नहीं करते थे। परन्तु जब इसी साल में सहायक (असिस्टेण्ट) कमिश्नर की आज्ञा से देहली में सरावगियों की रथ यात्रा हुई, तो रथ यात्रा के होने से एक दिन पहले रिवाड़ी के दूसरों ने खारी बावली के दुकानदारों से मिल कर उनको भड़काया तथा उकसाया और श्री कूपर डिप्टी कमिश्नर से उस को रोकने की प्रार्थना की और दंगा-फिसाद का भय प्रकट किया। दूसरे दिन जब रथयात्रा की सवारी सेठ के कूचे से पहाड़ी धीरज को जा रही थी और अभी दरीबे तक पहुँची थी, कि यकायक डिप्टी कमिश्नर ने उसे रोकने की आज्ञा दी। सरावगी इस हैरान करने वाले समाचार को सुन कर व्याकुल तथा चकित हुए। वे तुरन्त डिप्टी कमिश्नर से मिले और उससे अपनी रथयात्रा को सफल रूप से निकालने का प्रार्थना की। डिप्टी कमिश्नर ने अजमेरी दरवाजे से लेजाने का आदेश दिया। फल स्वरूप यह सवारी, बाजे, जयकार की ध्वनियों सहित राय बहादुर लछमन सिंह इन्सपेक्टर पुलिस के प्रबन्ध से धीरे-धीरे शान्तिपूर्वक अजमेरी दरवाजे के रास्ते से पहाड़ी धीरज पहुँची।

इसके वाद सरावगियों ने न्यायालय में प्रार्थना पत्र दिया, कि हम को लाहौरी दरवाजे, खारी बावली, व दरीबे से होकर सवारी को ले जाने की आज्ञा हो जाय। मिस्टर थार्टन जो मिस्टर कूपर डिप्टी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमिश्नर के स्थान पर आये थे, उन्होंने उसे उसी रास्ते से देहली में लेजाने की आज्ञा दी। सरावगी लोग इस आज्ञा से राजी न हुए, इसी बीच में वैष्णवों ने कर्नल हैमिल्टन कमिश्नर करनाल से मनाई (इम्तनाई)[1] का निवेदन किया और कमिश्नर साहब ने रथ का निकालना स्थगित रखा और उस की जाँच पड़ताल (तहकीकात) शुरु हुई।

सरावगियों ने इस मुकदमे की पैरवी के लिए श्री फिनक को वकील नियत किया। वकील साहब ने कोई ऐसी बात कही, कि कमिश्नर साहब इससे सख्त अप्रसन्न हुए और प्रमाण तथा आपत्ति के बिना सुने ही उस की मनाही की रिपोर्ट पंजाब सरकार की सेवा में भेज दी। यह रिपोर्ट स्वीकार हुई और मनाई का आदेश जारी हुआ।

जब वैष्णवों ने देखा कि सरावगी असफल हुए और हम को उसी तरह बराबर स्वतन्त्रा प्राप्त है, तो उन्होंने फिर यह चाहा, कि सरावगियों से बिल्कुल अलग हो जायें और शादी इत्यादि में आने जाने की रस्म बन्द हो जाये तो अच्छा हो इस उद्देश्य के वास्ते उन्होंने एक पंचायत की और उसमें यह बात ठहरी, कि सरावगियों से लेन-देन तथा आने–जाने की सब रस्में बन्द कर देनी चाहियें। इस पंचायत के बाद मेल-जोल के स्थान पर द्वेष और प्रेम की बजाय शत्रुता (अदावत) होने लगी। और दिन-प्रतिदिन दोनों पक्षों में शत्रुता कायम होती गई। और धीरे-धीरे ऐसी हवा चली जिस का प्रभाव दूर-दूर फैल गया। और जिस हिन्दु ने यह समाचार सुना, उसने शत्रुता का बीज दिल में बोया। इस का फल यह हुआ, कि स्थान स्थान पर विरोध और फूट होगई। और देहली में तो शत्रुता ऐसी बढ़ी, कि सरावगी जो धार्मिक काम करते थे, वैष्णव उस पर

---

१. रोकने का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एतराज व विरोध करते थे। यहां तक कि अफसरों को यह समझा दिया कि सरावगियों की रथयात्रा धर्म के सिद्धान्त में नहीं है, बल्कि वे एक नई रीत जारी करना चाहते हैं। मतलब यह है, कि वे सरावगियों की हर रस्म पर एतराज करते थे और पुरानी बातों को नई रीत कहते थे। पर सरावगी इस विचार से कि हमारे वैष्णव भाई एक साधारण मामले पर हम से अप्रसन्न हो गये हैं और उसके फल स्वरूप ऐसे काम करते हैं तथा जब हृदय के दर्पण से यह मैल जाता रहेगा, और वह आन्तरिक वैमनस्य साफ हो जायगा फिर उसी पुराने मेल-जोल तथा सम्बन्ध की ओर झुक जायेगा। इस लिए सरावगी वैष्णवों की किसी नई धार्मिक क्रिया पर आपत्ति न करते थे। उदाहरण के तौर पर राम लीला का मेला शहर देहली में रात के वक्त आज तक कभी नहीं हुआ, बल्कि पचास-साठ वर्ष के अरसे से रात के वक्त उसके निकलने की बिल्कुल मनाई हो गई थी। इस का कारण यह था, कि मुहर्रम के दस दिनों में इस मामले से मुसलमानों से दंगा-फिसाद हुआ था। उसी दिन से राम लीला के रात के वक्त निकालने की मनाई हो गई। परन्तु अब राम लीला रात को होने लगी। पर सरावगियों ने कुछ भी विरोध नहीं किया और अपने मतलब के सिवा कभी इस का जिकर भी नहीं किया। इसके विपरीत वैष्णव सरावगियों के हर पुराने काम को नया बताते थे। सरावगियों ने रथ यात्रा बन्द होने के वक्त से बराबर गवरनर जरनल हिन्द, तथा लैफटिनैंट गवरनर पंजाब तथा कमिश्नर व डिप्टी कमिश्नर दिल्ली की सेवा में सैंकड़ों प्रार्थनापत्र भेजे, परन्तु दुर्भाग्यसे एक भी सफल न हुआ और कोई अच्छा फल न निकला। उनकी फरयाद न सुनी गई।

सरावगियों को इस बात का बड़ा आश्चर्य था, कि इस सरकार के शासन में और इस कानून के अनुसार हर व्यक्ति को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वह स्वतन्त्रता प्राप्त है, कि अपने धार्मिक कर्तव्य पूरे कर सकता है। इसके अतिरिक्त महारानी विक्टोरिया ने यह घोषणा जारी की थी, कि हर आदमी अपने धार्मिक कर्तव्य विना किसी भय व रुकावट के कर सकता है और उसमें कोई भेद-भाव न होगा। इतना होने पर भी सरावगियों ने सोचा, कि हमारे भाग्य ने वह पलटा खाया है, कि हम अपनी धार्मिक क्रियायें करने से वंचित हैं। इस हालत को देख कर प्राय: हम लोगों को खेद हुआ करता था और कभी हमारी भावनाएं इतनी उत्तेजित होती थीं, कि नरमी के रास्ते को छोड़ दें। परन्तु हम समय तथा भलाई के ख्याल से न बोलते थे और अपने भाग्य पर सन्तुष्ट तथा अपने प्रयत्नों पर निर्भर थे और स्थानीय अधिकारियों से वार वार निवेदन और फरयाद करके अपने अफसरों से न्याय के इच्छुक थे। सरावगियों को यह पूरी आशा थी कि जिस दिन सरकार हमारे कष्टों पर ध्यान देगी, हमारी विपत्ति तथा चिन्ता बिल्कुल दूर हो जायगी।

इसलिए इस से पहले श्री मेकमाहन भू० पू० डिप्टी कमिश्नर ने सरावगियों तथा वैष्णवों के मनमुटाव को दूरक राना चाहा और ख्याल किया, कि यदि यह आपसी झगड़ा इसी तरह रहेगा, तो अन्त में इसका फल अच्छा न होगा और यह बात दूसरे शहरों में फैल जायेगी। इस वास्ते उन्होंने इस झगड़े को निपटाने के लिये दोनों पक्षों से पंच नियत किये और मिर्जा हिदायत अफजा उपनाम (उर्फ) मिर्जा इलाहीबख्श साहब को सरपंच नियत किया। इस पंचायत से दोनों पक्षों में शायद मेलजोल हो जाता, पर भाग्य ने यहां भी साथ न दिया और डिप्टी कमिश्नर की बदली हिसार हो गई औरकार्यवाही बिल्कुल स्थगित हो गई।

हांसी और हिसार में वैष्णवों और सरावगियों में जो झगड़ा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ और हार्दिक शत्रुता बढ़ी, तो फल यह हुआ, कि दोनों पक्षों में सब रस्में (क्रियायें) बन्द हो गईं, और ऐसा ही अम्बाले में भी हुआ। इन दोनों शहरों में तकरार का यह कारण हुआ, कि शहर दिल्ली तमाम शहरों में प्रसिद्ध है और यहां के आदमी प्रतिष्ठित गिने जाते हैं। उन लोगों ने देखा कि देहली में आपसी फितने की आग भड़की हुई है और सरावगियों की कोई रस्म भी देहली में नहीं होती। बस यहां भी ऐसा ही होना चाहिये क्योंकि यह तो नियत नियम है कि जब एक समुदाय को दूसरे समुदाय पर किसी कारण से श्रेष्ठता होती है, तो खामखा उस को साहस हो जाता है। तो उन्होंने अपने हां भी देहली जैसा प्रबन्ध किया कि सरावगियों की सब रस्में बन्द होनी चाहियें। उसका फल यह हुआ, कि उन की रस्में भी बन्द हो गईं। तात्पर्य यह, कि देहली के इस मामले ने कुल पंजाब बल्कि हिन्दुस्तान भर में उपद्रव कर दिया और सरावगियों तथा वैष्णवों में शत्रुंता और अदावत पैदा की। सरावगी गवर्नमैण्ट की सेवा में बराबर प्रार्थना पत्र भेजते रहे और कोशिश में कमी न की, पर भाग्य ने दाल न गलने दी, सब प्रयत्न विफल हुए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२

रथयात्रा फिर कैसे हुई ?

सन् १८७६ में जब कर्नल विलयम जार्ज डेविस कमिश्नर देहली, आये, तो यथावत सरावगियों ने न्याय-प्रार्थना की, और लाला बलदेव सिंह साहु देहली, ने इस मुकदमे का व्यौरा साहब को बतलाया तथा इस चतुराई और व्यवस्थित रूप से यह काम किया, कि साहब ने कहा, कि आप तसल्ली रखें कि इस मुकदमे में जो न्याय है, वही किया जायेगा। लाला साहब मुद्दत से इस कोशिश में थे, वे यह सुन कर सन्तुष्ट हुए।

अन्त में साहु बलदेव सिंह २८ सितम्बर सन् १८७६ भादों के मेले में कमिश्नर साहब को धर्मपुरे में अपने साथ लाये और मेले का निरीक्षण कराया और प्रतिमा जी के दर्शन कराये। साहब ने कुल मामले का निरीक्षण करके कहा, कि इसमें कोई बात आक्षेप के काबिल नहीं है। जो लोग बड़े बड़े बाजारों में रथ यात्रा को निकालने का विरोध करते थे उन में से बहुत से यहाँ मौजूद हैं, मेले को बड़े दिल से देखते हैं और प्रसन्न होते हैं। अत: उनका एतराज व्यर्थ मालूम होता है। इसके कुछ दिन बाद कमिश्नर साहब ने एक बहुत अच्छी रिपोर्ट सरकार की सेवा में भेजी। उसमें यह वाक्य भी लिखा, कि हमने मूर्ति को अपनी आंखों से देखा है और उस में कोई बात आपत्ति के योग्य नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसी बीच में शाही दरबार[1] हुआ। उसमें गवरनर जनरल हिन्दुस्तान ने अपने भाषण में कहा "इन दिनों महारानी विक्टोरिया की घोषणा के कारण धर्मों तथा सम्प्रदायों में कोई भेद-भाव नहीं है और प्रत्येक प्रजा अमन तथा शान्ति से रह सकती है। और हर पक्ष को सरकार की निष्पक्षता के कारण इस बात की आज्ञा है, कि विना किसी एतराज के अपने अपने धर्म की क्रियाओं को करें। सरकार ने जो हाथ बढ़ाया है, वह शान्ति के लिए है। समस्त देश की उन्नत्ति और सब प्रान्तों की दिन-प्रतिदिन की स्मृद्धि से अंग्रेज सरकार के प्रबन्ध का फल हर स्थान पर प्रकट है" इस भाषण को सुन कर सरावगी लोग बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें पक्की आशा हो गई, कि हमारी अभिलाषा जरूर पूरी होगी और हम अपने न्याय को प्राप्त करेंगे।

जब दरबार की भीड़-भाड़ से छुट्टी हुई तो फिर इस मुकदमे का आन्दोलन हुआ। और लाला बलदेव सिंह जो इस मामले में कमर कस कर लगे हुए थे एक जरा सा संकेत पाकर १७ मई सन् १८७७ को लाहौर पहुँचे और उन्होंने पंजाब सरकार के सेक्रेट्री मिस्टर ग्रिफन और लैफ्टिनेंट गवरनर साहब से भेंट की। उन्होंने इस मुकदमे में कोशिश की और फलस्वरूप अपनी तदवीर के जोर से ऐसा काम किया, जैसा चौदह वर्ष से आज तक किसी से न हुआ था। इसलिए लैफ्टिनैंट गवरनर पंजाब ने एक आज्ञा पत्र क्रमाँक २२४३ ए दिनाँक २२ मई सन् १८७७ कमिश्नर देहली के नाम जारी किया, कि सरावगियों की रथ यात्रा बड़े वड़े बाजारों में

१. सन् १८७७ में देहली में वायसराय लार्ड लिटिन ने महारानी विक्टोरिया के भारत की सम्राज्ञी होने की घोषणा करने के लिए यह दरबार किया था।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कराई जाय और उस की नकल पंजाब की कुल कमिश्नरियों को भेजी जाय।

इस स्थान पर यह बात भी उल्लेखनीय है, कि शहर देहली निवासी लाला रक्खू लाल, जो लखनौ कमसिरयेट में नौकर थे, ने गवर्नमैन्ट की सेवा में सैंकड़ों अर्जिया दीं, परन्तु वे दफ्तर दाखिल हो गईं और उन में से किसी पर भी कुछ आदेश नहीं हुआ। यहां तक, कि अधिकारी लोग उनकी कठोर वातचीत से अत्यन्त नाराज हुए। इस लिए यदि लाला रक्खू लाल यह कहें, कि यह काम मेरे निमित्त से हुआ तो यह उनकी बुद्धिमत्ता से दूर है।

गवर्नमैन्ट का उपरोक्त आदेश होने के वाद कमिश्नर साहब ने सोचा, कि रथयात्रा के होने से पहले यदि दोनों पक्षों का आपसी झगड़ा दूर हो जाय और वे साधारण मामले निमट जायें जिन के कारण ये झगड़े जारी हैं और आपस में मेल-मिलाप व एकता हो जाये, तो अच्छा हो। अतः साहब के पास मिलने के लिए जो भी व्यक्ति जाता उससे वह यही कहते, "सरावगियों की रथयात्रा के होने का हुकम आ-गया है। आप महानुभावों को उचित है कि उसमें कोशिश करें और मेरी यह सम्मति है, कि आपसी सन्धि (सुलह) हो जानी चाहिये, जिससे कि विरोध का बुरा फल मेल जोल तथा अनुकूलता के शुभ परिणाम से वदल जाये। वैष्णवों और सरावगियों के हृदयरूपी दर्पण में जो मैल आ गया है वह साफ हो जाय।"

आखिर ता० २६ जून १८७७ को इस उद्देश्य से अजायब-खाना, देहली, में दोनों पक्षों के मुखिया लोग, तमाम म्यूनिस्पल कमिश्नर, आनरेरी मैजिस्ट्रेट और डिप्टी कमिश्नर साहब इकट्ठे हुए। सब साहब इकट्ठे हुए और कोई वाद-विवाद आरम्भ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नही हुआ था इतने में यकायक कमिश्नर साहब पधारे और कहने लगे, "आप साहबों को मालूम है, कि सरावगियों की रथ-यात्रा का हुकम गवर्नमैन्ट से आ गया है और रथ निस्सन्देह निकलेगा। अब मेरी सम्मति में यह मुनासिब है, कि आप साहब सुलह करलें और धार्मिक क्रियाओं के सिवा जो झगड़ा हो उसे दूर करलें, तो सरकार को खुशी होगी।" सब साहबों ने गर्दन झुकाली और उन में से प्रायः सभी ने कहा, कि सुलह हो जाय तो बेशक अच्छा होगा। इसके बाद जल्से में उपस्थित लोगों के नाम लिखने शुरु हुए। फिर कुछ सज्जन बोले, कि हम तो हजूर के सेवक हैं और हमारे नाम लिखने आवश्यक नहीं। फिर भी नाम लिखने के बाद यह तय हुआ कि दोनों पक्षों के पाँच-पाँच आदमी पंच और डिप्टी कमिश्नर साहब सरपंच बनाये जांय और २६ जून तक फैसला करलें; और समझौते के बाद दोनों फरीक एक दूसरे को भोज दें। सभा में उपस्थित लोगों ने इसे स्वीकार किया और सुलह का होना अच्छा समझा। लाला रम्मीमल आनरेरी मैजिस्ट्रेट निष्पक्ष तथा पवित्र स्वभाव के थे, उन्होंने कहा, कि यदि आप साहबों को स्वीकार हो, तो पहले भोज मैं दूंगा क्योंकि जगन्नाथ पुरी से आकर मैंने कोई ज्याफ़त नहीं की।

निश्चित तारीख को आठ बजे कमेटी के भवन में जलसा हुआ। वैष्णवों की तरफ से कुंवर गोपाल सिंह, ला० रम्मीमल, राजा दीनानाथ, लाला नानकचन्द तथा मास्टर श्रीराम थे और सरावगियों की तरफ से ला० बलदेव सिंह, ला० अजुध्या प्रसाद, ला० धर्मदास खजांची, पं० मथुरा दास तथा बाबू श्रीराम वकील थे। और डिप्टी कमिश्नर साहब सरपंच थे। शर्तें पेश करके सुलहनामा लिखा गया, जिसकी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं :—

सुलहनामा दिनाँक २६ जून सन् १८७७

ता० २६ जून सन् १८७७ को अजायबघर, देहली, में डिप्टी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमिश्नर साहव सरपंच और कुंवर गोपाल सिंह, राजा दीनानाथ, ला० रम्मीमल, ला० नानकचन्द, तथा ला० श्रीराम साहब वैष्णवों की तरफ से तथा ला० धर्मदास, ला० अजुध्या प्रसाद, ला० वलदेव सिंह, ला० श्रीराम वकील तथा पं० मथुरादास सरावगियों की तरफ से पंच सभा में थे। इस सभा में ये शर्तें तय हुईं :—

(१) आगे से हमारी बिरादरी में बेटी व्यवहार की मनाई न होगी। हर एक भाई को अपनी रजामन्दी से अधिकार होगा, कि वह अपने लड़के-लड़की का विवाह वैष्णवों में करे। जो कोई ऐसा करेगा उसे किसी तरह की मनाई या कोई पूछ ताछ न होगी।

(२) सरावगियों को दावत में खाने के सम्बंध में कोई उज्र न होगा। जिस तरह दावत करने वाला दावत करेगा, उसी तरह दावत खाई जायगी। अगर किसी को किसी चीज से परहेज (छोड़) होगा, तो यद्यपि वह स्वयं उस भोज में उपस्थित होगा, मगर खाने के बारे में उसको मजबूर न किया जायेगा। वह अपनी तरफ से अपने वेटे या सम्वंधी को दावत में भेज देगा।

(३) जब वैष्णव साहेबान सरावगियों के भोज या विवाह में जायेंगे तो वैष्णव रिवाज के अनुसार खुद रात को खाना खायेंगे और सरावगी वैष्णवों को उन की रीति के अनुसार रात को खाना खिलायेंगे। और जब सरावगी वैष्णवों के हां दावत या विवाह में जायेंगे तो सरावगी अपने रिवाज के अनुसार खाना खायेंगे और वैष्णव सरावगियों को उन की रीत के अनुसार दिन में खाना खिलायेंगे।

सब ने इन शर्तों को पसन्द किया और झगड़ा मिटाने के लिए कागज़ पर पंचों आदि के हस्ताक्षर हुए और सरपंच साहब की सही के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाद यह सुलहनामा कमिश्नर साहब की सेवा में भेजा गया ।

इस के लिखने तथा पुष्टि के बाद आपसी लेन-देन भी जारी होगया । फलस्वरुप लाला धर्मदास भगवानदास ने अपनी जो नई कोठी (फर्म) गुलाबराय हजारीमल के नाम से खोली तो वसने (बही खाते) के उपलक्ष में एक रुपया प्रति ब्राह्मण शहर के तमाम सर्राफे में बांटा । इसी तरह वैष्णव साहबों ने भी सरावगियों के हां प्रसाद वगैरा भेजे और दोनों पक्षों ने स्वीकार किये ।

सरावगियों न २० जुलाई सन् १८७७ तदनुसार आषाढ़ सुदि दशमी दिन शुक्रवार को रथयात्रा निकालने की इच्छा प्रकट की । पहले सरावगियों ने यह चाहा था कि चार दिन की रथयात्रा करें और अपने धर्मानुसार श्री जी की प्रतिमा की स्थापना के लिए बड़ा मण्डप बनाएं और भजन वगैरह के लिए शामियाने और कटहरे का पण्डाल बीस पच्चीस हजार रुपये की लागत का तैयार करें और बड़ा ठाट बाट तथा शान-शौकत जाहिर करें । परन्तु निश्चित तारीख़ के नजदीक गर्मी की अधिकता तथा वर्षा के भय ने दुविधा डाल दी । और अन्त में एक दिन की रथ यात्रा उचित ख्याल की गई । उसके खर्च के लिए बिरादरी से चन्दा इकट्ठा किया गया । वह चन्दा कुल का कुल इकट्ठा नहीं किया गया, बल्कि यथा आवश्यकता लिया गया और बाकी आगे के लिये उन के नाम रहा ।

इसी बीच में १२ जुलाई सन् १८७७ को वैष्णवों की तरफ से जगन्नाथ जी की रथयात्रा हुई । सरावगियों ने हार्दिक एकता प्रगट करने के लिए नारियल व नकद रुपये चढ़ाये और यात्रा के साथ रहे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३

रथयात्रा में सहयोग तथा सरकारी पेशबन्दी

कर्नल हैमिल्टन, भूतपूर्व कमिश्नर, देहली, ने अपनी रिपोर्ट में यह लिखा था, और देहली में प्रायः यह मशहूर था, कि सरावगियों की रथयात्रा से हिन्दुस्तान की सब जातियाँ नाराज हैं। पर यहाँ तो उसके विपरीत नजर आया।

मुसलमानों की विज्ञप्ति

इस्लाम धर्म के अनुयाइयों का विज्ञापन इस बात का साक्षी है। जब रथयात्रा का हुकम आगया तो मुसलमानों ने ख्याल किया, कि हमारे नजदीक दोनों पक्ष बराबर हैं, हम किसी पक्ष के सम्बंध में कोई एतराज नहीं कर सकते। जिस तरह वैष्णव अपनी धार्मिक रस्मों को पूरा करते हैं, उसी तरह न्यायशील गवर्नमैन्ट ने सरावगियों को आज्ञा दी है। अब हमें यह उचित है, कि हाकिमों के दिलों से इस सन्देह को दूर करने के लिए अंजुमन इस्लामिया (मुस्लिम सभा) की तरफ से एक इशतहार जारी करें, ताकि खास-ओ-आम हमारी बेगरज़ी से परिचित हो जायें और अगर खुदा न चाहे किसी की ओर से कुछ दखल दिया जाय, तो हम वृथा बदनाम होंगे और जनता की जबान पर चढ़ेंगे। इसलिए हर आम रास्ते पर अंजुमन इस्लामिया की ओर से यह विज्ञापन लगाया गया :—

"शहर के निवासियों को खास तौर से और बाहर के निवासियों को आम तौर से सूचित किया जाता है, कि तारीख २० जुलाई को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरावगी सम्प्रदाय की रथयात्रा देहली में इस स्थान के हाकिमों के आदेश तथा आज्ञा से निकलेगी। यह आज्ञा न्यायशील सरकार की उस प्रतिज्ञा का फल है, जो बार बार वड़े मौकों व दरबार वगैरा में की गई है। उसका लाभ हर एक धर्म और सम्प्रदाय के लोग किसी दूसरे पक्ष के भय के बिना उठाते हैं। इस मौके पर हम को खास तौर से यह बात अपने मुस्लिम भाईयों के सूचनार्थ प्रकट करनी है, कि मुसलमानों को अंगरेजी शासन में क्या क्या स्वतन्त्रताएं प्राप्त हैं। थोड़े ही दिन हुए, कि सरकार ने लाखों रुपये की वह जायदाद मुसलमानों को दी, जो कि मस्जिद फ़त्हपुरी व जीनत उलमसाजिद से मिली हुई थी और उसका मुआवजा सरकारी खज़ाने से दिया। सरकार ने हमारी शिक्षा की तरफ भी ध्यान दिया। इस लिए हमें उचित है, कि ऐसी सरकार के आदेश के पालन में दिल से कोशिश करें। इस लिए हमें लाज़िम है, कि किसी विरोधी फरीक की प्रेरणा से कोई ऐसा काम सरकार के विरुद्ध न करें जिसका फल अप्रसन्नता के सिवाय कुछ न हो। इस लिए हमारी सच्ची और दोस्ताना सलाह को कान देकर सुने और इस उपरोक्त निवेदन पर अमल करें।"

यह विज्ञप्ति सैयद असगर अली सेक्रेट्री अंजुमन इस्लामिया देहली की तरफ से १४ जुलाई सन् १८७७ को प्रकाशित हुई थी।

सरकारी पेशबंदी (प्रबन्ध)

यद्यपि कमिश्नर साहब को मुसलमानों की ओर से अंजुमन इस्लामिया की विज्ञप्ति से और वैष्णवों की ओर से समझौते के कारण पूरा विश्वास हो गया था, फिर भी उन्होंने बुद्धिमत्ता से हर खास-ओ-आम को चेतावनी के वास्ते ता० १७ जुलाई १८७७ को अजायब खाने में एक आम दरबार किया और हर धर्म और फरीक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को निमन्त्रित किया। इस जलसे में पांच-छह सौ दरबारी कुर्सीनशीन होंगे। सुबह के सात बजे डिप्टी कमिशनर साहब पधारे। खानवहादुर मुन्शी अमीर अली खां तहसीलदार, देहली, ने पंजाव सरकार की चिट्ठी का अनुवाद सुनाया। फिर कमिश्नर साहब ने एक भाषण इस ढंग से दिया, कि सब के हृदयों पर अंकित हो गया और किसी ने सिर न उठाया।

कमिश्नर के भाषण का सार

हमने आप लोगों को दरबार में इस लिए बुलाया है, कि लैफ्टिनैंट गवरनर वहादुर ने जो आज्ञा सरावगियों की रथयात्रा के सम्वन्ध में दी है, उसे सब सुनें और समझ लें। उन का हुकम है, कि वैष्णवों के मुखिया अपने फिरके के लोगों को चेतावनी दें, कि किसी तरह का दंगा-फिसाद न करें। अगर कोई व्यक्ति ऐसा करेगा तो उसे उचित सज़ा दी जायेगी और अगर यह बात मालूम हुई, कि उस में किसी मुखिया का हाथ था या ऐसा हैं, तो उसे सजा मिलेगी और उसका नाम दरवारियों की सूची में से काट दिया जायगा। और आप आनरेरी मैजिस्ट्रेटों को भी समझाया जाता है, कि सरकार आप लोगों को जिम्मेदार करती है, कि कोई अनुचित काम न होने पाये और आपकी हुशियारी और खैरखाही से सरकार को भरोसा है, कि आप इस मामले में अच्छा प्रबन्ध करेंगे। ये चन्द बातें हमने लैफ्टिनैंट गवरनर के हुक्म के अनुसार सुनाई हैं। अब थोड़ी सी बातें दोस्ताना तौर पर कहता हूँ। पहले हम सरावगियों तथा वैष्णवों दोनों फरीकों को इस बात की बधाई देते है, कि बारह-तेरह वर्ष से जो झगड़ा आप लोगों में चला आता था, वह दूर हो गया। हम विश्वास करते हैं, कि जो सुलह अब हुई है, वह जाहिरा नहीं बल्कि दिली है क्योंकि उस का फल बहुत शीघ्र प्रकट हुआ है। विरादरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की जो रस्म बाबत लेन-देन भाजी वगैरा की थी, वह इस थोड़े से समय में खुल गई। बल्कि यहां तक सफाई हुई, कि कुछ सरावगियों ने जगन्नाथ जी के रथ पर फूल और दर्ब चढाया। ऐसी सफाई की आशा भी नहीं थी। मैं उन सरावगी तथा वैष्णव मुखियाओं का आभारी हूँ, जिनकी नेक कोशिश से यह नतीजा निकला और दोनो फरीकों के उन दूसरे मुखियाओं का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस काम में सहायता दी। अब सिर्फ यह कहना है, कि जिस तरह सरावगियों ने जगन्नाथ जी की रथयात्रा के समय दिली सफाई दिखलाई है, वैष्णव लोग भी अपनी तरफ से वैसी ही दिली सफाई जाहिर करें और सब को चाहिये, कि सब लोग अपनी और शहर की नेकनामी का लिहाज करें। ऐसी कोई बात न होने दें जिससे जरा सी भी बदनामी हो और शहर को दाग़ लगे।

उन्होंने अपने भाषण में आगे कहा—सरकार को और हमें अत्यन्त खेद होगा, अगर कोई ऐसी अनुचित हरकत हुई जिस से इस शहर की ताजा प्राप्त की हुई नेकनामी जाती रहे, खास तौर से उन दिनों में जब कि सरकार नें इस शहर की ख्याति को यहां तक बढाया कि शहन्शाही दरबार के लिए इस शहर को चुना। ये चन्द दोस्ताना बातें हमने इस शहर की खातिर कही हैं। वरना सरकार को कुछ परवाह नहीं है। सरकारी पुलिस और फौज मौजूद है और जो कुछ मुनासिब समझती है सरकार जबरदस्ती करा सकती है। परन्तु सरकार का कायदा है, कि जहां तक हो सकता है अपना मतलब नरमी और चेतावनी से निकालती है, सिर्फ लाचारी की हालत में सख्ती करती है। अतः हमें विश्वास है, कि सख्ती की नौबत नहीं आयगी, क्योंकि देहली के लोग बुद्धिमान और समझदार हैं। वे बादशाहों के आधीन पले हैं और उन्होने सभ्यता सीखी है। वे अधिकारियों के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसन्नता चाहेंगे, अपनी इज्ज़त और नेकनामी का ख्याल रखेंगे और कोई नामुनासिब बात न होगी।

रथयात्रा का प्रबन्ध

१८ जुलाई सन १८७७ को सरावगियों के सिवाय सब आनरेरी मेजिस्ट्रेटों व म्युनिस्पल कमिश्नरों को एक एक परतला कलावत्तू का तीस-तीस रुपये के मोल का सरकार की ओर से तमगे के तौर पर दिया गया। इस का उद्देश्य यह था कि ये लोग सरकारी पदाधिकारियों और मुखियाओं में से समझे जायें। चुनांचि लाला हरसुख राय व लाला मोहन लाल के मन्दिर से डिप्टीगंज तक आनरेरी मेजिस्ट्रेटों तथा म्युनिस्पिल कमिशनरों का इन्तजाम था। इन साहबों के सुन्दर प्रबन्ध से सवारी शान्तिपूर्वक निकली। १८ जुलाई को लैफ्टिनैंट गवरनर साहब के हुकम का अनुवाद, और कमिश्नर साहब का आदेशपत्र और डिप्टी कमिशनर की डौंडी का इश्तहार छपवा कर प्रचारार्थ आम रास्तों पर लगाया गया। उस को देखने से हर जगह इसी की चर्चा हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४

लैफ्टिनैंट गवरनर का निर्णय

मन्त्री गृह विभाग लैफ्टिनैंट गवरनर पंजाब की चिट्ठी नं० अ० २२४३, ता० २२ मई सन १८७७ का अनुवाद

बनाम लैफ्टिनैंट करनल डब्लु० जी० डेविस साहब कमिश्नर व सुप्रिन्टन्डंट, किस्मत देहली।

१. लैफ्टिनैंट गवरनर साहब का ध्यान सरावगियों के उस मुक़दमे पर रहा है, जो देहली में दसहरे के वक्त रथ निकालने के सम्बन्ध में था। एक अरसे से सरावगियों को रथ निकालने की मुमानियत थी और बल्कि देहली में कभी उसका रिवाज नहीं हुआ। लेकिन सरावगियों की तरफ से कई बार लोगों ने अधिकारीगण देहली व गवर्नमैन्ट की सेवा में अर्जियां दीं, कि हमारे धर्म की रस्म पूरा क़रने की हम को आज्ञा हो जाय और हमारा रथ हमारे तीर्थंकर पारसनाथ की मूर्ति के साथ शहर के बाज़ारों में निकले। और उन्हों ने यह भी निवेदन किया, कि हम को कोई कारण मालूम नहीं हुआ, कि सरकार अंगरेजों के शासन में उस रक्षा से वंचित किये जायें, जो कानून के अनुसार उस समस्त प्रजा के साथ बरते जाते हैं, जो अपने धर्म के रस्म-ओ-रिवाज और दस्तूरों को सभ्यता व शान्ति के साथ अदा करते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२. इस वारे में वहुत सी अर्जियां (प्रार्थना पत्र) गवर्नमैन्ट पंजाव के पास पहुँची और उन्हें अधिकारीगण देहली के पास मुनासिब हुक्म के वास्ते भेजा गया, क्योंकि लैफ्टिनैंट गवरनर, पंजाव, की यह सम्मति है, कि यह मामला, विल्कुल पुलिस के इन्तजाम से सम्वंधित हैं। और रथ की मनाही या आज्ञा का सरावगियों के धर्म से कुछ सम्बन्ध नहीं है, वल्कि लैफ्टिनैंट गवरनर साहव का यह ख्याल है, कि आया रथ के निकालने से शान्ति में कुछ फ़र्क आयगा या नहीं।

३. सन १८६३ में इस मुकदमे पर पूरी वहस (विवाद) हो चुकी है। उस मौके पर सरावगियों ने जिला सुप्रिन्टन्डन्ट पुलिस से प्रार्थना की थी, कि हम श्री पारसनाथ की मूर्ति को देहली के वड़े वाजारों में हो कर शहर के वाहर मन्दिर में ले जायें। और कुछ पुलिस अधिकारी सवार और सिपाही हमारे साथ कर दिये जायें। पुलिस अफसर व मैजिस्ट्रेट शहर ने रथ के निकालने की आज्ञा दी, लेकिन पुलिस की सहायता देने से इन्कार किया। दूसरे दिन वैष्णवों के चन्द मुखियाओं ने कूपर साहव डिप्टी कमिश्नर से विनती (फर्याद) की, कि जव तक इस मामले की तहकीकात (खोज-जांच) न हो जाय रथ न निकलने पाये। मालूम होता है, कि रथ निकलगया, पर ऐसी सड़कों पर से जहां आना-जाना कम है और इस बात की कोई रिपोर्ट नहीं हुई, कि किसी तरह उस में फ़र्क आया हो या कोई फिसाद (झगड़ा) हुआ हो।

४. सरावगियों ने इस हुक्म से अप्रसन्न होकर फिर थारटन साहव को जो कूपर साहव के स्थान पर देहली में नियत हुए थे इस विषय की अर्जी दी, कि चूंकि हमारे रथ को वड़े वाज़ारों में से होकर निकलने की इजाज़त (आज्ञा) नहीं हुई है, इस कारण जिस शान से हम चाहते थे रथ नहीं निकला और यह निवेदन है, कि पुलिस के नाम हुक्म जारी करना चाहिये, कि हमारी हर प्रकार से रक्षा करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डिप्टी कमिश्नर साहब ने यह ख्याल करके कि यह मामला सिर्फ पुलिस प्रबन्ध से सम्बन्ध रखता है, रथ की इजाजत देदी और रास्ता भी नियत कर दिया। पर पुलिस की मदद देने से फिर इन्कार किया लेकिन जब वैष्णवों ने करनल हैमिल्टन साहब कमिश्नर, देहली, से विनती की तो डिप्टी कमिश्नर साहब का हुक्म रद कर दिया। और रथ निकालने की मनाही हो गयी।

५. उस तारीख से आज तक सरावगियों की रथयात्रा देहली में नहीं हुई, सिर्फ तीन बार हुई है, सन १८१०, सन १८३४ और और १८६३ में। प्रथम बार सन १८१० में बड़ा झगड़ा हुआ था, मगर फिर दोनों बार कुछ झगड़ा नहीं हुआ।

६. अब सिर्फ निर्णय करने योग्य यह बात है, कि क्या रथ निकालने में ऐसा बड़ा भय है, कि जिससे उस की मनाही रखनी उचित है या नहीं। बाज अफसर यानी मैजिस्ट्रेट देहली व कमिश्नरों की नीचे लिखे कारणों से यह राय है :—

(अ) पहले यह कि सरावगियों के धर्म में रथ निकालना कोई खास सिद्धान्त नहीं है;

(आ) दूसरे सिवाय दो बार के साठ वर्ष के अरसे में रथ निकलने की कभी आज्ञा नहीं हुई;

(इ) तीसरे, सरावगियों और कई हिन्दुओं में सख्त दुशमनी है और इस हालत में जहां तक हो सके झगड़े का मौका नहीं देना चाहिये;

(ई) चौथे, देहली में बारातें और रथयात्रा आदि अब भी ज्यादा निकलते हैं। इस कारण से एक और हजूम (भीड़-भाड़) का मौका देना उचित नहीं;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(उ) पांचवें, सरावगियों का इस बात पर जिद करना कि उनका रथ निकाला जाय इस हालत में जब कि वे जानते हैं कि उसकी आज्ञा देने से गवर्नमेंट को कष्ट होगा उन की बदनीयती (दुर्भावना) और बेवफाई को बतलाता है।

७. सन् १८६३ में पंजाब गवर्नमेंट ने भी इन रायों (सम्मतियों) से सहमति की थी, मगर तेरा वर्ष बीतने के बाद लैफ्टिनैंट गवरनर की यह राय है, कि उन तमाम घटनाओं पर जो सन् १८६३ से हुईं और उस शान्ति पर जो उस तारीख से रही है, गौर करने से मुनासिब मालूम होता है, कि इस मुकदमे पर दुबारा विचार किया जाय। लैफ्टिनैंट गवरनर साहब को यह बात कुछ अजीब मालूम नहीं होती, कि सरावगी उस रंजिश (मन-मुटाव) को दूर करने के लिए, जिसकी देहली के हाकिमों को खबर दी ख्याल करते हैं और जिद्द करें। अगर कोई रंजिश आलोचकों की निगाह में छोटी और ख्याली है, तो इससे यह प्रमाणित नहीं होता, कि वे लोग भी उसको छोटी और ख्याली समझें, जिनको उसके जारी रहने से कष्ट पहुँचता है। हकीकत यह है, कि जिन रंजिशों को निष्पक्ष आदमी स्वभाव की बातें कहते हैं, वे सम्भवतः ऐसी हुआ करती हैं, जिनके कारण से इन्सान की भावनाएं जोश में आई हैं। जब तक कोई धार्मिक सम्प्रदाय यह ख्याल करता है, कि हम पर किसी प्रकार की मनाही (रुकावट) है, चाहे किसी से कम तकलीफ उसको पहुँचती हो, तब तक वह उसको पूरा करने की कोशिश करेगा। और जनाब लैफ्टिनैंट गवरनर की यह राय नहीं है, कि यह चाल-ओ-चलन मध्यम मार्ग से बाहर है, या उसमें बेवफ़ाई शामिल है। वास्तव में विचारनीय बात यह है, कि सरावगियों का रथ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निकलना बुरा है, या शर्म व लज्जा की नींव है, या शांति-अमन के लिए खतरनाक है। और अंगरेजी सरकार के लिऐ उचित है, कि उसकी कतई मनाही कर दे।

गवरनमैंट के बड़े लायक और नामी अधिकारियों ने जो विपक्ष में युक्तियां दी हैं, उन पर खूब गौर विचार करके तथा वड़ा आगा-पीछा सोचकर मिस्टर एजरटन साहब की यह राय है, कि सरावगियों की रथ यात्रा इस प्रकार की है, कि वैष्णवों ने उसके विरुद्ध जो उज्र (आपत्तियां) किये हैं, वे सब ख्याली (काल्पनिक) हैं और पक्षपात तथा हठ धर्मी लिए हुए हैं। देहली के कमिशनर रिपोर्ट करते हैं, कि वैष्णव बेपरदगी। (नंगेपन) की जो शिकायत करते हैं वह विल्कुल बेबुनियाद है। कमिशनर साहब कहते हैं, कि मैंने स्वयं मूर्ति को देखा हैं और उसमें कोई बात ऐतराज के काबिल नहीं है। अगर यही हालत है, तो लैफ्टिनैंट गवरनर बहादुर को यह मालूम नहीं होवा, कि सरावगी अपनी धार्मिक रस्मों को करने का हक (अधिकार) उस कदर क्यों न रखें, जिस कदर वैष्णवों को प्राप्त है। वैष्णवों पर वाजिब है, कि वे वही निष्पक्षता सीखें, जो गवर्नमैंट की तरफ से उनके हक में होती है। वैष्णवों की रामलीला की सवारी वड़ी धूम-धाम से निकलती है, उसमें वड़ी भारी भीड़ होती है और इसलिए आने-जाने में हर्ज होता है। वह सरावगियों की रथयात्रा की अपेक्षा ज्यादा एतराज के काविल है, क्योंकि सरावगी संख्या में कम हैं इस लिए उनकी रथ यात्रा में आदमी भी कम होंगे।

लैफ्टिनैंट गवरनर साहव इस बात को खूब जानते हैं, कि देहली के वैष्णव सम्प्रदाय के पक्षपाती आदमी इस हुक्म से नाराज होंगे, लेकिन यदि पुलिस अधिकारी और आनरेरी मैजिस्ट्रेट अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह पूरा करेंगे और मुझे विश्वास है कि इनकी ओर से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्त्तव्य पालन में कमी न होगी, तो रथ के निकलने की आज्ञा से शांति भंग न होगी। सरावगियों का रथ निकालने की आज्ञा देने से पहले कमिश्नर साहब देहली को यह उचित है, कि वे वैष्णव सम्प्रदाय के खास खास लोगों से मिलें और उनसे कह दें, कि गवर्नमेंट को आशा है, कि वे अपने और भाइयों को सुलह और कानून की सूचना दें और फ़िसाद-झगड़ा न होने दें। अगर चाहे उनके उकसाने या चाहे उनकी सहायता से शांति में किसी तरह का खलल डालने का इरादा किया जायगा, तो उनका नाम दरबार की सूची से निकाल दिया जायगा और गवर्नमेंट का उन पर सख्त कोप होगा। और जो लोग किसी सख्त झगडे के भागी होंगे, उन्हें कानून के अनुसार जो सबसे ज्यादा सख्त सजा है, वह दी जायगी। चूंकि लैफ्टिनैंट गवरनर साहब को देहली के आनरेरी मैजिस्ट्रेटों की वफादारी और बुद्धिमानी पर पूरा भरोसा है, इसलिए वे सरावगियों के रथ निकलने के वक्त अमन-शांति रखने के व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक रूप से उत्तरदायी किये जायेंगे।

८. लैफ्टिनैंट गवरनर साहब की यह राय है, कि यह मामला बिल्कुल पुलिस प्रबन्ध से सम्बन्ध रखता है, और उन्हें आशा है, कि देहली के अफसर उस रस्म को अदा करने में इन्तज़ाम रखेंगे, जो बिल्कुल एतराज योग्य तथा हानि पहुँचाने के लिए नहीं है।

कनरल विलियम जार्ज डेविस कमिश्नर साहब व सुप्रिन्टंडंट, देहली, ने ता० १३ जुलाई सन् १८७७ को डिप्टी कमिश्नर देहली को एक चिट्ठी में लिखा, कि वे सेक्रेट्री पंजाब गवर्नमैंट की उपरोक्त चिट्ठी की नकल को विज्ञापन के रूप में सर्वसाधारण के सूचनार्थ हर जगह दीवारों पर लगवादें और तारीख मेला से कई रोज पहले जैसा मुनासिब हो मनादी के द्वारा इस आज्ञा की सूचना कर दें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डिप्टी कमिश्नर साहब देहली ने ता० १७ जुलाई सन् १८७७ को इस आज्ञा की एक एक नकल जिला सुप्रिटंडंट पुलिस को भेजी और तहसील के द्वार पर तथा सड़कों पर लगवाने को लिखा। और यह भी लिखा, कि तहसीलदार को कहा जाय, कि वह हर मुहल्ले के चौधरी और मुखिया को इसकी परत देवें और सूचित कर दें, शहर में मनादी कर दें कि जो शख्स सरकारी आज्ञा के विरुद्ध मेले के दिन दंगा-फिसाद करेगा या शांति भंग का कोई काम होगा, तो कानून के अनुसार उसे पूरा दंड दिया जायगा।

इस मनादी के बाद कमेटी के मेम्बरों तथा आनरेरी मैजिस्ट्रेटों को हुक्म हुआ, कि वे दुकानदारों को चेतावनी दें, कि वे बीस तारीख को छह बजे दुकानें खोलें, वरना सरकार नाराज़ होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५

रथ यात्रा का समारोह

तारीख १९ जुलाई को रथ यात्रा में शामिल होने के लिए दूर-दूर से सरावगी लोग रेल और सवारी वगैरा के द्वारा आने शुरू हुए। देहली के सरावगियों की तरफ से उनकी आव-भगत होने लगी। रेल के आने के समय सरावगियों के स्वयंसेवक गाड़ियां व बग्गियां लिये स्वागत के लिए तैयार खड़े रहते थे। और उन्हें आदर सत्कार व सेवा से उनमें सवार करके शहर के उन बड़े-बड़े शानदार मकानों में ले जाते थे, जो पहले से ही इस मतलब के लिए निहायत अच्छे सुन्दर सामान से सजाये हुए थे और जिनमें रंग-बिरंग की विसातें फर्श बिछे हुए थे। उस दिन जिस तर्फ निगाह उठाकर देखते उसी तरफ अजीब दृश्य दिखाई देता था। सरावगियों के झुंड के झुंड अकड़ते हुए जाते थे और बग्गियों में बड़ी शान-ओ-शौकत से सुबह शाम मटर-गश्त के लिए निकलते थे। हर तरफ सरावगियों के सिवा और कोई दिखाई न देता था।

रथ निकलने से कई दिन पहले जिला अधिकारियों की आज्ञा से पूजा के वास्ते डिप्टीगंज में बड़े-बड़े चमकदार चमकीले खेमे खड़े किये गये। एक खेमा दक्षिण की तरफ और दूसरा उत्तर की ओर खड़ा किया गया। बीच में जो चौड़ा मैदान था, उसमें साठ-साठ दरवाजे एक दूसरे के सामने कायम करके उस पर सुन्दर ज़री के शमियाने सोने के मुलम्मेदार चांदी की चोबों पर खड़े किये। और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दरों में ज़रदोज़ी व कलावत्तू के परदे अजीब ढंग तथा तरकीब से डाले, जिससे वस्तुओं की चित्रशाला सी मालूम होने का शक होता था। बाहर की तरफ अबरक व बत्ती का आलीशान दरवाजा बना था। सूरज के प्रकाश तथा चमक-दमक के कारण उस पर दृष्टि न ठहरती थी। इसको सभामंडप कहते हैं। यह मंडप अत्यन्त सुन्दर तथा सज-धज का था। उसके बाहर नक्क़ारख़ाना था जहां नक्क़ारे बजते थे। अठारह व उन्नीस तारीख को डिप्टीगंज में शाम के वक्त अजीब हालत होती थी। देहली में शाम का वक्त बड़ा सुन्दर होता था। तमाम जैनी बड़ी संख्या में सैर के वास्ते निकलते थे। इस वक्त जनता की भीड़ प्रतिमा जी के मंडप की झंडियों को लहराती और वे झंडियां हवा के साथ बातें करतीं। नक्क़ारे की आवाज़ नफ़ीरी की धुन के साथ अजीब रंग दिखाती। सच तो यह है, कि यह मौका देखने योग्य था, न कि सुनने योग्य। इस बड़ी भीड़-भाड़ के आने जाने के बावजूद भी पुलिस का वह प्रबन्ध था, कि न किसी का बाल बांका हुआ और न कोई नुकसान हुआ।

ता १९ जुलाई को रथयात्रा के इन्तज़ाम के वास्ते एक कार्य-क्रम (प्रोग्राम) सरावगियों और पुलिस को दिया गया। पुलिस के इन्तज़ाम की कार्यवाही छपकर पुलिस अफसरों आदि को देने के अति-रिक्त बांटी गई। सवारी का जलूस और इन्तज़ाम इसके अनुसार रहा।

१९ तरीख की शाम को तमाम सरावगी लाला हरसुख राय तथा लाला मोहनलाल के मन्दिर में इकट्ठे हुए और लाला धर्म दास जी खजांची ने अपने पुत्र भौंदूमल को ख्वासी में सवार करने के लिए सात सौ रुपये की बोली दी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रथयात्रा के इन्तज़ाम के वास्ते इन ग्यारह व्यक्तियों को चुना गया और उनकी पहचान के वास्ते उनके पास गुलाबी रंग का एक-एक दुपट्टा था, जिस पर सुनहरी पेमक लगी हुई थी। इनके ज़िम्मे सवारी तथा सामान की देखभाल और भेंट के रुपये आदि की चौकसी करना था:—(१) लाला देवीदास (२) लाला पारसदास, (३) लाला शामलाल, (४) लाला प्यारेलाल, (५) लाला तन्नूलाल, (६) लाला जगन्नाथ, (७) लाला कूड़ामल, (८) लाला सीतलदास, (९) लाला ऋषभदास (१०) लाला फकीरचन्द और (११) लाला रूपचन्द।

ता० २० जुलाई की रात को दो बजे से सरकारी चिठ्ठी (सरकुलर) के अनुसार और सवारी प्रबंध कार्य-क्रम के अनुसार हुआ।

(रथयात्रा का समय तथा रास्ता नियत किया गया और हर रास्ते के हर बाजार आदि के लिए पुलिस अफ़सरों, आनरेरी मैजिस्ट्रेटों, पुलिस इन्सपैक्टरों तथा हैडकान्सटेबलों और पुलिस के सिपाहियों की ड्यूटी नियत की गई। यह भी नियत किया गया, कि सवारी कहाँ-कहाँ ठहरेगी और हर स्थान पर सवारी ठहरने का वक्त पांच मिनट नियत किया गया। सब कार्यक्रम तथा ड्यूटियों का ब्यौरा बड़े विस्तार से तैयार किया गया, जिससे किसी प्रकार की आशंका न रहे)[1]।

तारीख २० जुलाई को सुबह के छह बजे के करीब श्री जी की प्रतिमा उपरोक्त मन्दिर से सुन्हरी पालकी में सवार करके जुलूस बाजे सहित तथा सरावगियों के बीच में शफाखाने के मैदान में आई। यहां रात के दो बजे से पुलिस का प्रबन्ध था। स्थान-स्थान पर

१. यहाँ रथयात्रा के समय अधिकारियों और पुलिस की ड्यूटी का सविस्तार वर्णन है। अनुवादक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गली-कूचों, बाजारों कोठियों पर सवारी वाले मन्दिर से लेकर डिप्टी-गंज तक कान्स्टेबल (सिपाही) खड़े थे। प्रतिमा जी को पालकी में से उतारकर निहायत सुन्दर दोमंजिला सुन्हरे रथ में विराजमान किया गया। यह रथ बडौदे वालों की तरफ से पन्द्रह वीस हजार रुपये की लागत में तैयार हुआ था। यह रथ दूर से सोने का पहाड़ सा मालूम होता था। और जिस शख्स की नज़र उस पर पड़ती थी वह सहसा वाह-वाह कहने लगता था। सरावगियों के अतिरिक्त हर कौम के लोग इस रथ को आश्चर्य की दृष्टि से देखते थे और इसकी चमक-दमक को देखकर यह कहते थे, कि इस जल्से में यह रथ दर्शनीय था। ऐसा क्यों न हो ? जिसके बनाने पर दिल खोलकर रुपया खर्च होगा, वह ऐसा ही अद्भुत बनेगा। वास्तव में इन लोगों का कहना ठीक है। यह रथ ऐसा ही था। इसकी जिस कदर प्रशंसा की जाय कम है।

खवासी में बैठने का गौरव लाला धर्मदास के सुपुत्र लाला भौंदूमल खजानची ने इक्यावन अशर्फियां भेंट करके प्राप्त किया। जुए पर बैठने का मान लाला बलदेवसिंह साहब ने प्राप्त किया। क्यों न हो ? यह उन्हीं के प्रयत्न का फल था और उनके ही निमित्त से ही हमें यह दिन नसीब हुआ। कुल सरावगी लोग लालाजी के आभारी हैं।

अब सवारी सज-धज कर कुल जुलूस के साथ चलनी शुरू हुई और सरावगियों की तरफ से भोजगियों और दूसरे लोगों को शाल-दुशाले, कपड़े दुपट्टे तथा नक़द व अशरफी वगैरा इनाम में दिये गये। इस इनाम से कोई वंचित नहीं रहा। सवारी बड़ी शान से धीरे-धीरे आगे बढ़ी। दर्शकों की भीड़ उमड़ी चली आती थी। जिधर देखिये, शादी का सा जोबन था। सामने श्रीमान कमिश्नर साहब व ब्रिगेडियर साहब एक विशालकाय हाथी पर चांदी के हौदे में सवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थे। इनके आगे-पीछे अरदली के सवारों की कतार थी। डिप्टी कमिश्नर साहब व मिस्टर पारकर जज एक हाथी पर सवार थे। हाकिमों तथा प्रबन्धकों आदि के कारण मेले की दोचंद रौनक थी। सवारी थोड़ी देर ठहरकर आहिस्ता २ स्थान-स्थान पर ठहरती हुई भजन तथा जय-जय की ध्वनि के बीच होती हुई शान-शौक्त के साथ दरीबे में पहुंची। जिस सरावगी की जो दुकान या मकान आता था, वहां वह अपनी शक्ति के अनुसार नज़र—भेंट देता था। चुनांचि जब सवारी खजानचियों के मकान के सामने पहुंची तो लाला अजुध्या प्रसाद व ईसरी प्रसाद ने इक्कीस रुपये भेंट किये। गर्ज ज्यूं-ज्यूं सवारी आगे बढ़ती गई, शान और शौकत भी दोबाला होती गई। खूनी दरवाजे के बाहर निकलकर तो वह भीड़ हुई, कि उसका अंदाजा लगाना कठिन है। जब सवारी लाला बलदेवसिंह के मकान के समीप पहुंची तो उन्होंने दो अशर्फियां भेंट कीं।

जुलूस की रौनक का वर्णन करना कठिन है। उसमें चांदी की अत्यन्त सुन्दर पालकियां थीं। रंग-बिरंगे लकड़ी के सामान कटहरे आदि थे। ज़रदोज़ी और सुन्हरी झोल हाथियों पर पड़े हुए थे और उन पर सुन्हरी हौदे रखे हुए थे। बेल-बूटे सुन्दर तथा अच्छे रंग-बिरंगे बने हुए थे। इन्हें देखकर प्रकृति भी अनुरक्त दिखाई देती थी। सुन्हरी और रूपहली चीजें तो इतनी सुन्दर थीं, कि उनके सामने आकाश भी शर्माता था। बात यह है, कि जुलूस का वर्णन लेखनी से बाहर है। जुलूस के सामान को देखकर वाह-वाह होती थी। सब अंगरेज तथा हिन्दुस्तानी अफसर सवारी के साथ थे। खूनी दरवाजे से घंटाघर तक सवारी दक्षिणी सड़क पर थी और घंटाघर से तहसील तक उत्तरी सड़क पर। और सरावगियों की जो दुकान या मकान रास्ते में आता था वहां नजर भेंट होती थी। हर तरफ तमाशाइयों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की भीड़ थी और हर स्थान पर लोग सवारी को देखने की इन्तज़ार में खड़े थे। दोनों तरफ की दुकानें बराबर खुली हुई थीं। जो लोग रथ निकालने के विरुद्ध थे, वे भी बड़े शौक से देख रहे थे। वे अपनी खुशी से खुली पेशानी से अपनी दुकानें खोले हुए बैठे थे। सवारी आहिस्ता-आहिस्ता ठहरती हुई जाती थी। भजन व जयकार बुलन्द होती जाती थी। अब सवारी चांदनी चौक की तरफ़ से आगे बढ़ी। यहां जौहरियों और खंडेलवालों ने अपनी शक्ति तथा श्रद्धा के अनुसार रुपये अशर्फियां भेंट कीं। इस वक्त सवारी एक अजायब खाना सा मालूम होती थी और उसकी शान देखने योग्य थी। जिव्हा और लेखनी उस शान को वर्णन करने में असमर्थ हैं। यूरोपियन लोग दूरबीन से मेले की कैफियत देख रहे थे और उसकी रौनक तमतराक को देखकर चकित थे। वे उसका फोटू उतार रहे थे। श्री जी की सवारी आहिस्ता-आहिस्ता सुढंग से जा रही थी। लाहौरी दरवाजे सदर बाजार से होकर डिप्टीगंज में पहुँची। वहां से श्री जी की प्रतिमा सोने की पालकी में शानदार मंडप में आई। सुन्हरी बेदी में प्रतिमा जी को विराजमान किया गया और पूजा आदि शुरू हुई। सभामंडप में भजन आदि होते रहे।

लाला धर्मदास भगवानदास खजानचियों की तरफ से ज्योनार भोज का प्रबन्ध था। बिरादरी के बाहर से आने वाले सज्जनों ने खाना खाया। लाला साहब ने स्वागत सत्कार तथा अतिथ्य में कोई कसर न उठा रखी इस भोज में चौबीस पच्चीस हजार आदमियों ने भोजन किया होगा। दो बजे तक भोज-ज्यौनार समाप्त हुई।

दो बजे के बाद वहां से सवारी वापिस आने की तैयारी हुई। मेरठ निवासी लाला नाहरसिंह गुलाबसिंह ने ग्यारह हजार पांच सौ रुपये देकर ख्वासी में बैठना स्वीकार किया। उस समय लाला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

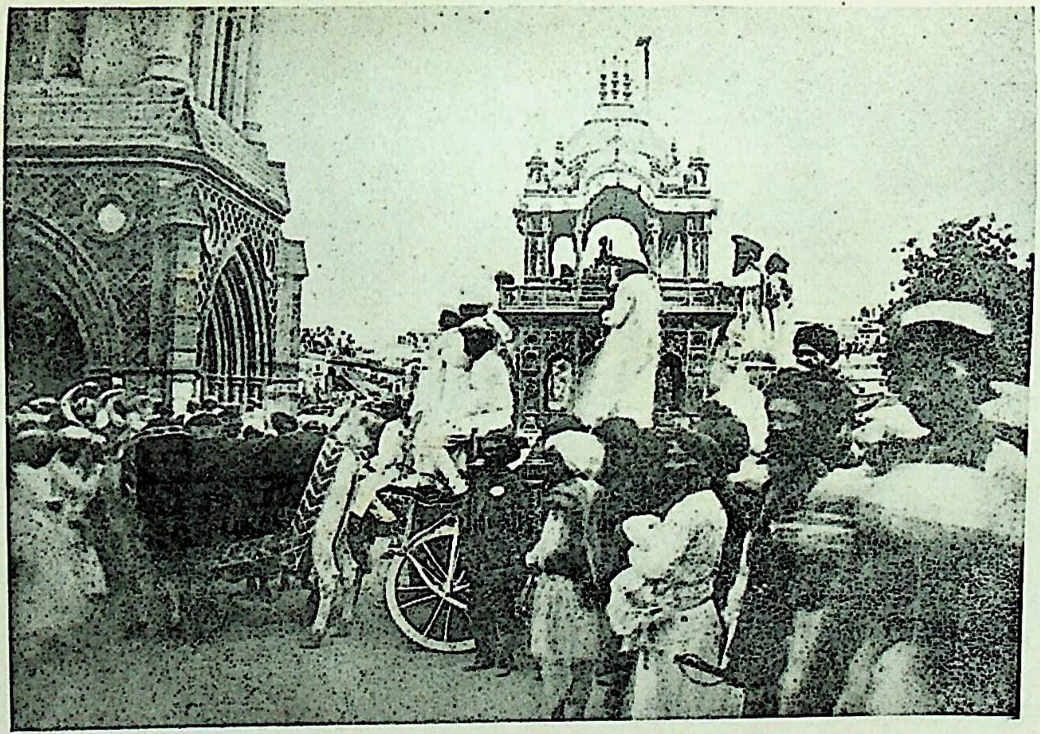

जैन रथ यात्रा देहली का जलूस घंटा घर के पास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोध्याप्रसाद ने बुलन्द आवाज़ से कहा, कि मेरे ग़रीब खाने पर पधारने का कष्ट करें और मुझे सेवा का अवसर दें।

जिस तरह सवारी गई थी उसी तरह उसी रास्ते से वापिस हुई। जब रथ चांदनी चौक घंटा घर के सामने पहुँचा, तो वैष्णव साहबों की तरफ से श्रीजी को भेंट नज़र दी गई। जब वहां से सवारी कोतवाली के करीब पहुँची, तो कमिश्नर साहब को गोटे का हार पहनाया गया और उनका आभार माना गया। साहब भी मेले की शानो-शौकत से बहुत खुश थे और उन्होंने सरावगियों को रथ यात्रा के इस प्रकार निकलने पर बधाई दी। अन्त में शाम के सात बजे सवारी धर्मपुरा के मन्दिर में पहुँची। उस वक्त बड़े ज़ोर की वर्षा हुई, मानो इन्द्र देवता भी प्रसन्न हो कर श्रद्धा-पूर्वक भक्तिभाव से बूंदों के मोती न्योछावर कर रहे थे।

२१ तारीख को लाला अयोध्याप्रसाद इसरीप्रसाद ने बिरादरी के लोगों को प्रीतिभोज दिया। उस में कुछ वैष्णव भाई भी पधारे। और भी कई दावतें हुईं। बाद को १५ अगस्त तक बराबर इनाम वगैरा बंटते रहे। इस तरह देहली में सन् १८७७ में रथयात्रा का उत्सव बड़ी धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

دانشمندان انصاف جو و ہنروران اس امر سے بخوبی پر ظاہر ہے کہ جین بہت قدیم اور نہایت پرانا مذہب ہے

یہ مشکل بات نہیں ہے پہلی تواریخ کی ورق گردانی سے بھی اسکا ثبوت ہو سکتا ہے اس مت کے پیرو بادشاہت کے بھی رتبہ پا چکے

اور انکا اصول مذہب بطور ترقی میں سرائت کئے لوگ سب دیکھتے ہیں کہ جسکو دل سے بھی ابتدا و تار تسلیم کرتے ہیں وہ مانتے ہیں

زمانہ سابق میں اکثر راجہ بھی جین مت کے پیرو گذرے ہیں چنانچہ دکن کی طرف ملک کرناٹک میں ہو کے بڑے

جین دہرمی جین مذہب کے راجہ اب بھی موجود ہیں لیکن جب سلطنت مغلیہ نے ہندوستان کو

تہ و بالا کیا اس وقت سے جینو کو اسقدر فروغ نہ ہوا اور روز بروز انکی ترقی کم ہوتی گئی سنہ میں

شاہجہان بادشاہ نے اپنی نام پر شاہجہان آباد بسایا اور زیر قلعہ اردو بازار بنایا تو بادشاہ نے کئی خاص

شخص کو جو سراوگیوں کی قوم میں معزز اہلکار تہا زیر قلعہ جین مندر کی تعمیر کی اجازت دی باوجودیکہ اب بہی

جرنیلی حد میں بہی اور اسکے گرد و نواح کی تمام مکان منہدم ہو گئے مگر تاہم نواب گورنر جنرل کے شاہی حکم سے

وہ مندر اب تک برقرار موجود ہے ان ایام میں جب یہ مندر تیار ہو چکا تو سراوگیوں نے رتہ جاترا کی رسم کی

हस्त लिखित प्रति जैन रथ यात्रा देहली का इतिहास सन् १८७७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

اسیطرح اسکی لیکہ کئی نوبت رتہ جاترہ ہوئی اور ... لیکن بعد میں بھی کسی نے اس امر کے خبر مزاحمت کی

دہلی میں جب سرکار انگریزی کی عملداری ہوئی تو ہر فرقے نے اپنی اپنی مذہبی رسوم ادا کرنے کی ... آزادی

حاصل ہوئی — چنانچہ جب شاہ ابن محمد اکبر بادشاہ ثانی تخت نشین ہوئے تو ... پہلو کی جانب

دہلی میں سراوگیونکی رتہ جاترا امن و امان سے ... اگرچہ بازاری مسلمانوں نے لالہ ہرسکھ رای صاحب کے

مندر پر حملہ کیا چنانچہ صاحب موصوف نے بادشاہ کی استصواب سے فوراً اسکا انسداد کیا اور کچھ نقصان

نہونے دیا۔ سنہ ... میں اسی بادشاہ کی عہد میں مسٹر فنیف صاحب بہادر مجسٹریٹ دہلی کی ... رونق

کی انتظام سے سراوگیونکی رتہ جاترا بڑی رسم سے شہر دہلی میں ظہور میں آئی اور ناگر جی کی سواری چنگلہ ...

لاہوری دروازہ و کنہاری باؤلی و چاندنی چوک و دریبہ میں ہو کر امن و امان سے مندر جی میں پہنچی اور کسی قسم کا

دنگا و فساد و بلوا اہل شہر کی رعایا میں سے بھی کسی مذہب کی آدمی نے اس امر میں مداخلت نہیں کی سراوگیونکو

رتہ جاترا ... دہلی میں نہیں ہوتی بلکہ اور مقامات میں بھی ہوتی رہتی ہی جیسے کلکتہ اجمیر تمام

ہندوستان کا دارالحکومت ہی اور سرکار انگریزی کا آئین ہی اور تسمیں ہر قوم و ہر مذہب کو آزادی

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्तज़ाम नामा
बरामद रथ
सरावगियान

रचयिता

सैय्यद फ़ज़ल हुसैन साहब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

بعون خالق کون و مکان در زمین زبان نسخہ مسمی

بموجب استفسار زمین مالان سال الانتظام نامہ مع حالات مندرجہ فہرست اول سالانہ مسمی

انتظام نامہ آمد

سنہ ۱۸۷۶ع

قصبہ [illegible]

سنہ ۱۲۹۳ھ

تصنیف سید فضل حسین صاحب تحصیلدار ضلع انبالہ ...

در مطبع فیض عام واقع دہلی مطبوع ان جہان شد

इन्तज़ाम नामा बरामद रथ सरावगियान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्तज़ाम नामा

अव्वल सनाए नाज़िमे नज़्मे जहां करूं ।
फिर हाले रस्मे रथ को अयां और बयां करूं ।
अहवाले नज़्मो नस्क को ज़ेबे ज़बाँ करूं ।
तहरीरे नज़्म का जो सबब है अयां करूं ।

खुरसन्द बन्द बन्द से हर अक्लमन्द हो ।
हर बन्द दिल पसन्द हो पुररश्के कन्द हो ॥१॥

हाँ ऐ ज़बाने ख़ामा ख़बर दार हो ज़रा ।
दरबारे बज़्मो रज़्म में दुरबार हो ज़रा ।
शमशीर वार वार पे हर वार हो ज़रा ।
बाज़ारे कारज़ार जिस में ज़ार हो ज़रा ।

तक़रीर साफ़ साफ़ हो रंगे मसाफ़ हो ।
तहरीर में खिलाफ़ न हो और न लाफ़ हो ॥२॥

देहली पुलिस में जो हैं असिस्टैन्टे नामदार ।
मिस्टर जनाब राटन साहब फलक विक़ार ।
जर्रारो पहलवानो फलातूने रोज़गार ।
कर्रारो नौजवानो बहादुर बकारे ज़ार ।

कब्जे में उनके दंग हैं हर बन्दोबस्त के ।
है याद रंग जंग की फत्तहो शिकिस्त के ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज़ बस्के क़द्रदाने सख़ुन बे मिसाल हैं।
और रज़्मो बज़्मो नज़्म में नाज़ुक ख़्याल हैं।
फ़रमाया रथ निकलने के जो जो कि हाल हैं।
गर नज़्म में रक़म हों मुनासिब कमाल हैं।

फ़ौरन उठाके हाथ को ताज़ीम की गई।
तामील हुक्म के लिए तस्लीम की गई ॥४॥

परताप सिंह जो चुस्तो दिलावर हैं लाजवाब।
हैं डिप्टी इन्सपैक्टरे अव्वल व आबोताब।
वह भी मुसिर हुए कि अगर नज़्म में शिताब।
तहरीर हो तो खल्क़ हो महज़ूज़ो कामयाब।

तामीले हुक्म जल्द बताजील की गई।
तहरीर हाल जुमले व तफ्सील की गई ॥५॥

करता है अब यह अर्ज़ व खिदमात नाज़रीन।
फज़्ले हुसैन डिप्टी इन्सपैक्टरे ख़रीन।
देहली पुलिस स्टेशने चारम में जागुज़ीन।
रब्ते कलाम नज़्म मुझे मुतलक़न नहीं।

कुछ भी ख़ता जो वज़न में या और जापे हो।
हों ऐबे पोश गोशों नज़्र ता अतापे हो ॥६॥

देहली में रथ निकलने की एक धूम धाम है।
तैयारिए जलूस बसद एहतमाम है।
ख़न्दां हर एक सरावगी हर सुबहो शाम है।
चेहरे हैं सुर्ख़ लब पे यह सब के कलाम है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुक्काम के तफ़ैल यह दिन हाथ आया है।
मुद्दतमें हुक्म रथ के निकलने का पाया है ॥७॥

रथ के निकलने की इजाजत मिली हमें।
आज़ादगी की दौलतो हशमत मिली हमें।
कुलफ़त के बदले राहतो इज़्जत मिली हमें।
इज़्जत यह हाकिमों की बदौलत मिली हमें।

मज़हब की रस्म सबकी सब अंजाम हो गई।
आज़ादगी बदौलते हुक्काम हो गई ॥ ८ ॥

ख़न्दाँ हैं सूरते गुले खन्दाँ सरावगी।
हैं बाग़ बाग़ शक्ले गुलिस्तां सरावगी।
लाला हैं रखते जश्न का सामाँ सरावगी।
हैं लाले चेहरा सूरते मिरजां सरावगी।

हर तन पे फूल फूल के वह आबोताब है।
ग़ैरत से शमा गुल है चमन में गुलाब है ॥ ९ ॥

ग़ुल है वह हो जलूस जहां नूर नूर हो।
इस नूर की झलक से फ़लक तूर तूर हो।
वह नूर का ज़हूर बहुत दूर दूर हो।
जो नूरे चश्म हूर का दिल चूर चूर हो।

पहुँची ख़बर जो कान में वह ग़ैर हाल हो।
ग़ैरत से लाल ज़र्द बफरते मलाल हो ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरचा यह है कि रथ का निकलना रवा नहीं।
यूं ग्राम फिरना कूचा व कूचा रवा नहीं।
मूरत का फिरना ख़ास बरहना रवा नहीं।
ग्रौर वैष्णव को देखना इसका रवा नहीं।

निकला भी पहले रथ न कभी ग्रहदे शाह में।
वेशक फिसाद होगा हमारी निगाह में ॥११॥

हैं बाज़ मर्दे ख़ाम जो बदनाम जा बजा।
नाराज़ रथ निकलने से हैं ग्राम जा बजा।
खुफिया यह मश्वरे हैं बद ग्रंजाम जा बजा।
होना जो हो सो हो वोह करें काम जा बजा।

हर चन्द कुछ ज़रर हो या सूदमन्द हो।
पाबन्द हो फ़िसाद की यह रस्म बन्द हो ॥१२॥

बाज़ों का कुछ ईरादा इसरार कीजिये।
दुकानदारो कार से इनकार कीजिये।
हड़ताल सब ब कूचे ग्रो बाज़ार कीजिये।
बाज़ार में यह सूरते ग्राज़ार कीजिये।

हुक्काम अपने काम से बदनाम होवें गे।
ग्रंजाम को सरावगी नाकाम होवें गे ॥१३॥

जिन लोगों में तग्रस्सुबे मज़हब ज़रा नहीं।
दानाँ हैं ग्रौर ग्रक़ील हैं पर खुद नुमां नहीं।
शर्रो फ़िसादो जहलो गज़ब मुतलक़न नहीं।
लबखेज़ सलाहे नेक कभी ग्राश्ना नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उनका यह कौल है कि ख़तर है फ़िसाद में।
अंज़ाम सोचलो के ज़रर है फ़िसाद में ॥१४॥

पहले हैं गुज़रे जितने सलातीन रोज़गार।
अहले हनूदो साहबे इस्लाम नामदार।
हासिल हुई थी अहद में उनके न ज़ीनहार।
आज़ादगी किसी को यह था ज़ुल्मे आश्कार।

आज़ादगीए ख़ल्के ख़ुदा अदल साफ़ है।
जो वरख़िलाफ़ इसके हो इन्साफ़ लाफ़ हैं ॥१५।

क़िस्मत में देहली की जो कमिश्नर हैं नेक नाम।
करनैल डेविस साहबे ज़ी शानो अहतशाम।
ज़ी इल्म ज़ी फज़ीलतो ज़ी फख़रो एहतराम।
जिनपर है नज़्मो नस्को अदालत का ख़त्म काम।

हैवत से उनकी दाद की वह इन्सदाद है।
वकरी वगल में शेर के आबादो शाद है ॥१६॥

अज़ वस्के दिल में अदल का उनके मुक़ाम है।
अहकामे हक से काम उन्हें सुबहो शाम है।
किया एहतताामे अदल वग़ैरे तमाम है।
आराम ऐसे काम में एक दम हराम है।

मसरूफ़ मोहलत जो वह रोशन ज़मीर हो।
बातिल से हक़ जुदा जुदा पानी से शीर हो ॥१७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और दूसरे जो डिप्टी कमिश्नर हैं बा विक़ार।
मिस्टर स्माइथ साहब ज़ी जोदो इफ़तिख़ार।
ख़ुश खल्को ख़ुशमिज़ाजो ख़ुशआइनो नामदार।
नौ शेरवाने दहर फ़लातूने रोज़गार।

दाना हैं और अकील हैं और नेकनाम हैं।
आलम में उनके फ़ैज़ के इनआम आम हैं ॥१८॥

इल्म उन पे ख़त्म और बलाग़त भी ख़त्म है।
हल्म उनपे ख़त्म और वज़ाहत भी ख़त्म है।
अदल उनपे ख़त्म और अदालत भी ख़त्म है।
रौब उनपे ख़त्म और शुजाअत भी ख़त्म है।

नो शीरे रज़्मे अदल यह जब यां अयां हुआ।
नोशेरवाने अदम को ख़िज्ल वां रवां हुआ ॥१९॥

चर्चा यह था कि दोनों ने कोशिश से ग़ौर से।
चुस्ती से इन्तज़ामे मुमालिक के तौर से।
नरमी से तुनदही से अदालत के ज़ोर से।
तदबीरे इन्तज़ाम करी ज़ोरो शोर से।

बुलवाके हर रईस को एक अन्जुमन करी।
दरबार आम के लिए रश्के चमन करी ॥२०॥

दरबार में हर एक रईसो अमीर को।
हर मेम्बरे कमेटी सग़ीरो कबीर को।
और हर एक मजिस्ट्रेट अक़ीलो मशीर को।
और नीज़ साहबाने पुलिस फ़तहगीर को।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैष्णव को और सरावगियों के गिरोह को।
हर कौम से बुलाया हर एक बाशिकोह को ॥२१॥

हाज़िर जो क़ौम क़ौम का सरदार हो गया।
दरबारे पुर वहार चमन ज़ार हो गया।
लब ऐसी गुफ़्तगू से गोहरबार हो गया।
इज़हारे हाल मतलबे सरकार हो गया।

जो जो कि सरग़ना थे वह खुरसन्द हो गये।
वाहम फरीक दोनों रज़ामन्द हो गये ॥२२॥

इस्लामिया जो अन्जुमने पुर वहार है।
देहली में गैरते चमन व लाला ज़ार है।
हाजिए कुतबेदीन जो दयानतशुआर है।
उस अन्जुमन का सदर नशीं बा विक़ार है।

रोका सलाहे बद से हर एक नेक नाम को।
हर नेको बद को साहबे इस्लाम आम को ॥२३॥

जारी यह इश्तिहार किया अपने तौर से।
सोचो ऐ मुसलमानों ज़रा दिल में ग़ौर से।
सरकार का यह अदल है किस जोरो शोर से।
आजादगी है सब को हैं महफ़ूज़ जोर से।

तरग़ीब से किसी के न वह कारोबार हो।
जो बरखिलाफ़े मर्ज़िये सरकार कार हो ॥२४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आख़िर वह आया रोज़ कि जिसका था इन्तज़ार।
था शोहरा शहर शहर में जिसका वहर दयार।
जौलाई की वह बीसवीं दिन जुम्मा नो बहार।
अठारह सौ के बाद सतत्तर दमे शुमार।

वह रोज़ रथ निकलने का आलम फ़रोज़ था।
नौ रोज़ जिस के आठ पहर चश्मे दोज़ था ॥२५॥

अब हाले इन्तज़ामे पुलिस कुछ बयां करूँ।
चुस्ती व रुस्तमीए पुलिस कुछ अयाँ करूं।
वा वस्फ़ सफबन्द ही पुलिस मैं जवां करूं।
सब पर अयां ज़माने में राज़े निहां करूं।

तहरीर असल हाल का वो रंग ढंग हो।
जो जो सुने यह हाल वह सुन सुन के दंग हो ॥२६॥

देहली पुलिस में जो सुपरिन्टैन्डैन्ट बा जलाल।
मेजर लावारेट साहब खुश ख़ल्क बा कमाल।
जर्रारे खुश ख़िसाल हैं कर्रारे बे मिसाल।
मुल्ज़िम को जीना जिनके हो इकवाल से बवाल।

मोजिद हैं इन्तज़ाम के और बन्दोबस्त के।
हैं ख़त्म उनपे कायदए फतहो शिकस्त के ॥२७॥

फौजे पुलिस पे जगह उनकी कमां हुई।
हर गोशे फतह आते ही कुरबां बजां हुई।
गर फ़ौज़ को इशारए अबरू से हां हुई।
बिजली सी तेज़ तीर से पहले रवां हुई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुश्मन का दिल शिकस्त से चिल्ला के फटगया।
दस्ताँ का ज़ोरे दस्ते ज़ेर दस्त घट गया ॥२८॥

रथ का निकलना सुवह को हंगाम छह बजे।
मन्दिर से हरसुखराय के एक धूम धाम से।
ता नौ बजे पहुँचना बफ़रते जलूस के।
मैदाने डिप्टी गंज में ज़ीनत किये हुये।

यह वक्त गश्त ख़ास मुक़र्रर किया गया।
वापिस भी जाना तींन से ता छह बजे हुआ ॥२९॥

रस्ते के पांच हल्क़े मुकर्रर किये गये।
अबजद के हरफ़ों नाम से नम्बर किये गये।
मामूरे इन्तज़ाम जो अफ़सर किये गये।
साहब पुलिस के उनके भी सर पर किये गये।

ता अपने अपने हल्क़े के सब ज़िम्मेवार हों।
चुस्ती व तुनदही से हर एक कारोबार हो ॥३०॥

फ़ौजे पुलिस जो हल्कों में आ आ के जम गई।
सब अपने अपने मौके पे जा जाके जम गई।
काली घटा सी चारसू छा छा के जम गई।
हैबत दिलों पे रौब की लाला के जम गई।

क्या नज़्मोनस्क़ो रौब था क्या बन्दोबस्त था।
दब दबके दबदबे से जो सरकश था पस्त था ॥३१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहरों पे अपने चुस्त सिपाहीं खड़े हुए।
वर्दी सियाह पेटियां काली पड़ी हुए।
हाथों में डंडे जैसे नगीने जड़े हुए।
जूं कोह सब ज़मीं पे गड़े और अड़े हुए।

तनतन के अपने तन को अजब तानते हुए।
बन बन के शेर हुक्म बदिल मानते हुए ॥३२॥

अफ़सर वह सर पे उनके शुजाओ दलेर थे।
और उन पे साहबाने पुलिस यल थे शेर थे।
रुस्तम से पेश उनके ज़बरदस्त ज़ेर थे।
बिलजज़्म शर से दूर थे जोयाएं खैर थे।

वर्दी सियाह थी तेग कमर में लटकती थी।
काली घटा में फ़ौज की बिजली चमकती थी ॥३३॥

अम्बाला की पुलिस के जो हल्के में नामदार।
करनैल बेली साहब जर्रारे रोज़गार।
डिप्टीए इन्सपैक्टर जनरल है बा वक़ार।
रुस्तम की शान शेर की हैबत यलोंका कार।

सरकार के न कार से एक दम फ़राग़ था।
चोरों का उनके नाम से दिल दाग़ दाग़ था ॥३४॥

रहवार पर सवार ब जाहो ज़लालो शान।
गहवार गाहे पार कभी यां कभी वहाँ।
तलवार ज़रनिग़ार कमर में हलाल सां।
हर वार वर्क़ वार हो जिसका शररफ़िशाँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सफ़सफ़ पे अपनी फौज के जाजा के आती है।
खुश खुश हो इन्तज़ाम से आआ के जाती है ॥३५॥

हल्के में पहले और कभी सानी में आ गई।
सालिस में गाह रावे में हैवत दिला गई।
ख़ामिस में दब दवा कहीं जुरअ़त दिखा गई।
चुस्तीं से गह यहाँ गहे वाँ जा बजा गई।

क्या तनतना था रौब था क्या क्या शकोह था।
चूं कोह काह दब दबे से हर गिरोह था ॥३६॥

देहली में व्राज़ लोग कि अज़बस शरीर थे।
वां शर को रफ़ए शर को यहां वो मशीर थे।
सर तो कमां से ख़म थे ये सरकश जो तीर थे।
हाज़िर थे खुश थे दिल से मगर गोशागीर थे।

वह दबदबा वह रौब तेरा वह असर हुआ।
शर हर बशर के दिल से सरासर बदर हुआ ॥३७॥

मजहब का जिस को जोशेतअ़स्सुब कमाल था।
बातिन में उसके ग़ुस्सा था रंजो मलाल था।
ग़ैरत से ऐसा हाल था जीना मुहाल था।
जोशो ख़रोशो ग़ैज़ खिरद का वबाल था।

सूए फ़िसाद कुछ भी तबीयत जो आती थी।
हैबत से इन्तज़ाम के होश उड़ के जाती थी ॥३८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हल्के में पहले 'ए' के ज़मन्दर ब कर्रोफ़र।
दरवाज़ा खूनीतक थे शुजाग्राने नामवर।
मिस्टर जनाब राटन साहब वह शेरनर।
रुस्तम सितम से खौफ़के जिनके हुए जिगर।

वह तनतना वह दबदबा किस ग्रानतान का।
जिससे हो खौफ़ तन में न हमतन की जानका ॥३९॥

मिस्टर थे मुडली साहब व मुख्तारसिंह जवां।
दो इन्स्पैक्टरान पुलिस बाहज़ारे शां।
मुंशिए हरसरूप धर्मरूप प्यारे जां।
सोयम थे बेनज़ीर मोहम्मदनजीर वां।

अठारह सारजन्ट थे और दस सवार थे।
एक सौ अठावन उनमें सिपाही शुमार थे ॥४०॥

दोयम में 'बी' के हल्के में वहां पर ज़खूनी दर।
ता घंटाघर थे एक असिस्टैन्ट नामवर।
मिस्टर जो विन्स फोर्ट हैं साहब हैं खुश सिपर।
सरदार अतरसिंह भी थे बा शानेकर्रोफ़र।

चौदह थे सारजन्ट दो सरदार और थे।
कन्स्टिेबिल एक सो बीस थे चुस्तीके तौर थे ॥४१॥

सोयम में 'सी' के हल्के में बाशाने सरवरी।
घंटे से ताबमस्जिदे शाही फ़तहपुरी।
अम्बाला की पुलिस के असिस्टैन्ट थे जरी।
बमकलेड साहबे हश्मो जाहो बरतरी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिसरीका क्यों हो ज़ायक़ा उनकी न बात में।
अख़लाक की सिफ़ात हैं सब उनकी ज़ात में ॥४२॥

मुनशी गुलामो ख़ादिमें अब्बास नामदार।
थे इन्स्पैक्टर उसमें अक़ील और होशियार।
फ़ज़ले हुसैन नाज़िमे ईं नज़्मे पुरबहार।
और अमरसिंह कि चुस्त हैं सरदार ओहदेदार।

थे आठ सारजण्ट चौहत्तर जवां भी थे।
सब मह्व अपने काम में थे जां फ़िशां भी थे ॥४३॥

ह़ल्के में चौथे 'डी' के वह बख़्ते सईद थे।
साहब पुलिस के मीर मुहम्मद रशीद थे।
आसारे रौबो फ़तहो ज़फ़ो पदीद थे।
जो चश्मे महशरो न दीदो शुनीद थे।

वर्दी वदन पै चुस्त थी और ख़ुद भी चुस्त थे।
मुफ़सिद जो चुस्त-चुस्त थे देख उनको सुस्त थे ॥४४॥

अम्बाला के जिले के यह वो नामदार हैं।
दरबार में कि जिनके बड़े ऐतबार हैं।
सरकार के जो कार बड़े पेचदार हैं।
दारोमदार उन पे बसद इक़तदार हैं।

हुक्काम उनके काम से राज़ी तमाम हैं।
हर काम में अनाम में वह नेक नाम हैं ॥४५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिस्टर मैगन थे साहब अक़ील और हुसैनीखां।
जर्रार इन्सपैक्टरे खुशखल्क़ो खुश वयां।
हिम्मतसिंह और रामसिंह उसमें बइज़्ज़ो शां।
दोनों थे चुस्त डिप्टी इन्स्पैक्टरे जवां।

दस सारजण्ट सौ थे सिपाही शुमार में।
सरकार से बजान हों वो कुरबां जो कार में ॥४६॥

हल्के में 'ई' के अज़ दरे लाहोरी राह पर।
ता डिप्टीगंज मिस्टर हूमन थे ज़िम्मेवर।
साहब जलालो रौब असिस्टैन्ट नामवर।
खुश खल्को खुश मिज़ाजो खुश आवाज़ो खूश्तर।

आग़ाज़ गो शवाब का था नौजवां भी थे।
तदबीर में थे पीर अक़ीलो ज़मां भी थे ॥४७॥

करनाल के भी थे एक इन्स्पैक्टरे जवां।
और डिप्टी इन्सपैक्टर चुस्तो जरी वहां।
दो लाला चुन्नीलाल व अमानत निशानखां।
और तीन और जिनके हों औसाफ़ क्या वयां।

अठारह सारजण्ट थे छब्बीस सवार थे।
छप्पन व सौ सिपाही बड़े होशियार थे ॥४८॥

और पांचो हल्कों में थे बसद कर्रो फ़र्रो शां।
साहब मजिस्ट्रेट भी आँनरेरी सब वहां।
थे परतले सुनहरी कमर में वो ज़रफिशां।
जिन पर न ठहरे चश्म महो महरो आस्मां।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इमदाद इन्तज़ाम में मसरूफ़ कार थे।
घोड़ों पै चुस्त जाहो हशम से सवार थे ॥४९॥

हल्क़े में पहले जल्वा नुमां चूँ महे मुँबी।
लाला रमीमल और मुहम्मद ज़हीरदीन।
और दूसरे हैं साहिबसिंह साहिबे यक़ीं।
सफ़दरहुसैन खानेंबहादुर मइनुद्दीन।

एक हक़शनास मुन्शी जीवनलाल पास थे।
और पास उनके लाला श्रीनिवासदास थे ॥५०॥

सोयम में ज़र्को बर्क़ से जूं महरो मह अयां।
गोपाल सिंह कँवर भी व महबूब बख्शे खां।
खाने निज़ामुद्दीन चहारुम में शेरसां।
और मुन्शिए परेम नरायन व अज़्मे शां।

पंजुम में मीर कासिमअली ख़ुश सिफ़ात थे।
मिर्ज़ा सुलेमाँ शाह वहीं उनके साथ थे ॥५१॥

देहली में जौ अमीरअली नामदार हैं।
तहसील ख़ास देहली के तहसीलदार हैं।
ज़ी इल्मो ज़ी कमाल हैं ज़ी इक्तिदार हैं।
हक़गो हैं हक़ पसन्द हैं हक दोस्तदार हैं।

सरकार के वदिल थे वो मसरूफ कार में।
दरबार में भी मह्व थे हर कारोवार में ॥५२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिर्जा अलाउद्दीन हैं जो नवाबे मुस्तताब।
खां साहबे रईसे लुहारू फ़लक जनाब।
जिनका है फ़खरू द्दौला कि सरकार से ख़िताब।
देहली में बे वहाओ यकता हैं लाजवाब।

इल्मो हुनर में फ़ज़ल में वो बा कमाल हैं।
हल्मो वफ़ा में अक़ल में वह बे मिसाल हैं ॥५३॥

जर्रार नामदार हैं बा इक्तदार हैं।
कर्रार रोज़गार हैं आली विक़ार हैं।
सरकार के जो कार में वो जां निसार हैं।
दरबार में भी उनके बड़े ऐतवार हैं।

तहरीर की जनाब कमिश्नर के नाम पर।
हाज़िर हूं मैं जो हुक्म हो इस इन्तज़ाम पर ॥५४॥

आए ग़रज़ बजाहो ज़लालो अरूजो शां।
थे मह्व इन्तज़ाम अजब शान से वहां।
थर्राए देख जिसको तहमतन के तन में जां।
दस्तां हो ज़ेरे दस्त जो हम दस्त हो यहां।

क्या ज़र्को बर्क़ फ़िशां थे क्या ख़ुश लिबास था।
हर मुफ़्सिद उनको देखके ख़ुद बद हवास था ॥५५॥

जो जो सरावगी थे कि ज़ी क़द्रो ऐतबार।
वो भी इसी तरह हुए मामूर हल्क़ावार।
वक्ते जलूस हल्क़ों में हो हो के ज़िम्मेवार।
ता उनकी मार्फ़त हो तामील हुक्मो कार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहरे निशां दुपट्टा गुलाबी थे दोश पर।
सर गर्मे इन्तज़ाम थे क्या दिल थे जोश पर ॥५६॥

कट घड़ थे बीस पहले से ता पांच पास पास।
रंगीनलाल मुन्शी थे और लाला देवी दास।
लाला चिरंजी लाल भी थे जानकी भी दास।
और छह से ता बा आठ थे दो मर्द हक़ शनास।

वृन्दावन उन में ऐन धरम की निशानी थे।
और खुशलिबास जानकीदास उनमें सानी थे ॥५७॥

और नौ से त व दस थे ख़ुद अंदाज़ खुश अमल।
उमरावसिंह मुन्शी व लाला हज़ारी मल।
थे बांकेराय ग्यारहवें में मुन्शीए अहल।
और मोती लाल जिनके न हो काम में ख़लल।

थे बाहरवें में लाला सम्मन लाल ख़ुश वयाँ।
और लाला ज़ोरामल भी अजब शान से वहां ॥५८॥

थे तेरह और चौदहवें में लाला गनेशी लाल।
शौसिंहराय मुन्शी भी थे मर्दे बा कमाल।
थे मथुरादास पन्द्रहमें मर्दे ख़ुश खिसाल।
और दूसरे दुआरका दास उसमें ख़ुश जमाल।

और सोलह और सतरह कटघड़े जो पास थे।
दोनों में तीन मर्द अजब ख़ुश लिबास थे ॥५९॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जगदीश मुन्शी दानाए व होशमन्द।
और राय तनसुख उनमें थे और लाला मेहरचन्द।
अठारह से थे बीस तलक पाँच हक़ पसन्द।
बलदेव सिंह रईस व धर्म दास अक्लमन्द।

इस जल्से के अजोध्या परसाद बानी थे।
और जौहरीमल और धर्मदास सानी थे॥६०॥

हम राह रथ थे मेजरे जर्रार शेर शां।
साहबे जलालो रौबो कमालो अरूजे शां।
जिनकी तमाम फ़ौज पै हर गोशे से कमां।
हाल उनका पहले हो चुका तफ़सील से बयां।

मिस्टर हमिल्टन उनके बराबर थे शेर थे।
साहब बड़े ज़री थे शुजाओ दिलेर थे॥६१॥

परताप सिंह भी साथ थे पुर ज़र्क़ खुश लिबास।
जो डिप्टी इन्स्पैक्टरे अव्वल हैं हक़ शनास।
तय्यार उनकी जेब में वारण्ट थे पचास।
और थे समन पचास भी मौजूद उनके पास।

ता हर बशर कि शर पै जो तय्यार हो ज़रा।
माखूज़गी में वक़्फ़ा न ज़िनहार हो ज़रा॥६२॥

थे कानह सिंह भी साथ व शह बाज़ खाँ वहां।
अव्वल थे सारजण्ट व चुस्ती रवां दवाँ।
बन्दूक वाले बीस सिपाही शररफ़िशां।
और तीन सारजण्ट मुसल्लह जरी जवां।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ता कुछ कड़ी हो या हो ज़रूरत बड़ी बड़ी।
हुक्मे रेडी को सुनते ही होवे रेडो रेडी ॥६३॥

दो सारजण्ट व बीस सिपाही भी थे जरी।
तलवारें डंडे हाथों में पास उनके हथकड़ी।
अमनो अमां मे आए जो कुछ फर्क़ अबतरी।
मुफ़सिद से हो मुआख़िज़ा फ़ौरन न हो बरी।

खौफ़े मुआखि़ज़ा से जो सरकश थे दंग थे।
सब अपनी जां से तंग थे फ़क़ उनके रंग थे ॥६४॥

बाज़ारों सक्फ़ों कूचों में अम्बोह आम था।
मजमा था और हजूम था और अज़दहाम था।
कटघड़ का रस्ते रस्ते पै क्या इन्तज़ाम था।
हर दर पै चुस्त पहरा था यह एहतमाम था।

जिसके न पास सुर्ख टिकट या सियाह हों।
बे पास कुछ न पास करें सद्दे राह हों ॥६५॥

थी लैन बन्दी पहरों को बाज़ार में क़तार।
हर जा पै तारे बर्क़ की रफ़्तार और उतार।
हर्जा न कुछ हो ता के ख़बर पहुँचे बर्कवार।
और सक़्फ़ हाथ पहरा नज़र दूरे वार पार।

मुलहक़ गली व कूचे जो थे सब में गश्त था।
थे जा बजा रिज़र्व चमन कोहो दश्त था ॥६६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रथ के निकालने के थे सामां नए नए।
गुंचे नए नए थे गुलिस्तां नए नए।
निरती नए नए थे भजन ख्वाँ नए नए।
बिस्तां नए नए थे परिस्तां नएँ नए।

क्या ज़र्को वर्क़ो शान थी और क्या जलूस था।
ताऊस क्या जलूस वह रश्के अरूस था ॥६७॥

आगे वह बाजा जिसका कि शोहरा है जा बजा।
अंगरेज़ी वाजा कहिए उसे है वजा बजा।
यक फ़ील पीछे उसके ब सामाने खुशनुमा।
और झंडेवाला उस पै सवाराने महलक़ा।

और पीछे उसके सांडनी तैयार चार थीं।
उन पर निशानवाले थे क्या खुश बहार थीं ॥६८॥

फिर तीस झंडे वाले थे तिफ़लाने महजबीं।
फिर ताशे मरफ़े वाला खुश आवाज़ नाज़नीं।
फिर एक बंगला जिसमें थे नक्क़ारए ज़रीं।
फिर पन्द्रह अस्प जिनके अजब साज़ और ज़ीं।

फिर ताशे मरफ़े जिसकी सदा थी यह जाबजा।
बाजा है बे नज़ीर वंजा है वजा बजा ॥६९॥

फिर एक गुलालबार था बाज़ेब बे शुमार।
फिर पीछे उसके बाजाए अंग्रेज़ी की क़तार।
फिर पांच पालकी थीं तिलाकार पुरबहार।
फिर तीन रथ थे चोबी व अस्पान बे सवार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुलकार कुल यह कार अजब गुलवहार था ।
गुल क्या वहारे गुल के गले का यह हार था ॥७०॥

फिर तीन फ़ील चौकी थीं चोबीनो ज़रनिगार ।
अंग्रेज़ी बाजे की थी एक नक्ल पुरबहार ।
फिर तीन रथ थे बैल के खाली बिला सवार ।
फिर मजमये सरावगियां मिस्ल लाला ज़ार ।

थी चौकी रोशन उनमें भजनख्वाँ भी साथ थे ।
निरतीए खुश ज़बां व खुश इलहां भी साथ थे ॥७१॥

फिर रथ था पारसनाथ का ज़रींन ख़ुश नुमा ।
अम्बोह फिर सरावगियों का बसद जिला ।
वह नूर का जहूर वह रौनक़ तरब फ़िज़ा ।
मैदाने पुर फ़िज़ा वह सामाने दिलकशा ।

रथ आया और फिर गया इस धूम धाम से ।
.शर या फिसाद कुछ न हुआ इन्तज़ाम से ॥७१॥

पहुँचा था रथ अयां यह हुआ तुरफ़ा माजरा ।
आसाढ़ का महीना था खुश्की थी जा बजा ।
थी धूप गरम ऐसी के महशर था इक बपा ।
जलजल हो खाक आग खिज़ल हो के हो हवा ।

आया वह अब्रे तार धूंआधार हो गया ।
रोशन जो दिन था दममें शबे तार हो गया ॥७३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नाज़िल हुई वह वारिश बाराने करदिगार।
गोया था रथ पहुँचने का अव्वल से इन्तज़ार।
गर्मी उड़ी जहां में हुई मौसमे बहार।
रूए ज़मीं से दूर हुई गर्दे और ग़ुबार।

रूए ज़मीं थी दीदके काबिल वह आब है।
हो आफ़ताब उसके व मुकाबिल यह बात है ॥७४॥

पानी जो ज़ोर शोर से हरजां रवां हुआ।
हर बाग़ फूल फूल के शकले ख़िबां हुआ।
तब हर सरावगी के यह विरदे ज़वाँ हुआ।
बरकत यह ख़ास रथ की है जो कुछ अयां हुआ।

कहते थे बाज़ वैष्णव यह रहमत ख़ुदाई है।
बारिश गुनाहे खलक़ के धोने को लाई है ॥७५॥

क्या बन्दोबस्त चुस्त था क्या इन्तज़ाम था।
सामान क्या दुरुस्त था क्या चुस्त काम था।
मजमा कसीर खल्क का था अज़दहाम था।
बाज़ारो कूंचे पर भी हजूमे तमाम था।

तक़रार कुछ कहीं न हुआ और न शर हुआ।
हब्बे का भी किसी का न नुकसाने ज़र हुआ ॥७६॥

शिमला के कोह पर जो हैं नव्वाब मुस्तताब।
लफ़्टीण्ट हैं गवर्नर पंजाब के जनाब।
फ़य्याज़ क़द्रदाँ हैं बहादुर हैं लाजवाब।
रुस्तम का ज़िनके नाम से ज़ोहरा हो आब आब।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खुश हो के भेजा तार खुद इस इन्तज़ाम पर।
यह साहबे कमिश्नरे देहली के नाम पर ॥७७॥

इस इन्तज़ामे मेले से खुश हो के ज़ल्दतर।
हम आप को मुबारकी देते हैं और खबर।
अरबाव म्युनिसिपल कमेटी जो खुश सियर।
और जो मजिस्ट्रेट हैं ऑनरेरी नामवर।

डिप्टी कमिश्नरो पुलिसे नेक नाम के।
मशकूर हम हैं फ़तह से इस इन्तज़ाम के ॥७८॥

अब बादे खत्म हाल यह मसकीन सरबसर।
फ़ज़ले हुसैन नाज़िमे ई नज़्मे मुख्तसर।
करता है अर्ज़ खम पए तस्लीम करके सर।
खिदमत में सब के जो हैं रईसाने नामवर।

है चश्मदाश्त सुनले ज़रा चश्म खोल के।
मीज़ाने अदलो अक्लो अदालत में तोल के ॥७९॥

मुद्दत से यह मुक़द्दमा नाज़ुक था पेचदार।
दरख्वास्तें गुज़रती थीं हर साल बार बार।
लेकिन फ़रीक़सानी की कसरत थी बे शुमार।
इसके सिवा था आम को यह अमर नागवार।

शर पर जो हर बशर था तो खुद सर कमाल था।
थीं कुछ नज़र ज़रर पै न ज़र पर खयाल था ॥८०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहले जो साहबाने बहादुर अज़ीम शां।
लफ़्टैन्ट और गवर्नरे जरनल फ़लकमकां।
कैसे बड़े बड़े थे अलुलअज़्म शेरे सां।
उन से मुहिम यह सर न हुई था यही गुमां।

रथ के निकालने की इजाज़त जो होवेगी।
शर करके खल्क मुफ़्त में जाँ अपनी खोवेगी ॥८१॥

देने में हुक्म के जो ताम्मुल तमाम था।
लारेब मुक़तज़ाए ताम्मुल यह काम था।
लेकिन वनज्रे ग़ौर न इन्साफ़े आम था।
आज़ादगी का नाम फ़क्त वहरे नाम था।

यह फ़तह इस मुहिम की जो नाज़ुक तमाम थी।
आखिर उसी के नाम हुई जिस के नाम थी ॥८२॥

यह कौन माहे ओज जलाले गवर्नरी।
वह कौन शाहे फ़ल्के कमाले सुखनवरी।
वह कौन साहबे हश्म व जाहो सरवरी।
वह कौन जिसकी कूनो मकांमें है बरतरी।

जम रुतवा है गवर्नर जनरल खिताब है।
दस्तूर खास लार्ड लिटन वो जनाब है ॥८३॥

और दूसरे वो कौन जनाबे फ़लकमकां।
नौशेरवाने दहर सुलेमाने ईं ज़मां।
ज़ी अदलो ज़ी शुजाअत व ज़ी इल्मो क़द्रदां।
औसाफ़ जिन के साफ़ हुए पहले सब बयाँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लफ़्टीनेन्ट शेर नर हैं अजर्टन वह नाम है।
पंजावो शशज़हत में जो विरदे अनाम है ॥८४॥

आली गुहर यह दोनों वो यकता हैं इन्तखाव।
सानी कोई न तीसरा जिनका है दरजवाव।
एक आफ़ताबे अदल है दोयम है माहताव।
पर माहो आफ़ताव में कव है यह आवोताव।

नूर उनका शव को गाह है और दिन को गाह है।
यह नूरे अदल आठो पहर बारह माह है॥८५॥

जिस क़ौम की कि हिन्द में कसरत कमाल थी।
आज़ादगी उसी को यह जाहो ज़लाल थी।
क़िल्लत थी जिसकी उसकी वह ज़िल्लत ववाल थी।
था जब्र से वह हाल गुज़र भी मुहाल थी।

दोनों के ज़ोरे अदल से हर ख़ासो आम को।
आज़ादगी नसीब हुई अब दवाम को॥८६॥

ऐ ज़ेबे ताजे फ़र्क़े अदालत सद आफ़रीं।
ऐ नूरे शमे बज़्मे जलालत सद आफ़रीं।
ऐ आबे दुरे दुर्जे हकूमत सद आफ़रीं।
ऐ ताबे महो बुर्जे हिमायत सद आफ़रीं।

ऐ मरहबा ज़माने को दिल शाद कर दिया।
आबाद मुल्क ख़ल्क़ को आज़ाद कर दिया॥८७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मालो कमालो दौलतो इक़बालो बरतरी।
जाहो जलालो शौक़तो शाने सिकन्दरी।
रोबो शिकोहे नादरी व बन्दा-परवरी।
सरकार के नसीब हो बा अ़दल गुस्तरी।

ता मज़हबी रसूम में आज़ादगी रहे।
हर फ़िरके में अ़मूम में आज़दगी रहे ॥८८॥

क्यों आजकल जहाँ में व नूरे सरूर है।
क्यों नूर अदलो दाद का अज़बस ज़हूर है।
इतराफ़े कोहसार हर इक तूर तूर है।
इक नाफ़े ह़ूर दयार हर इक नूर नूर है।

पंजाब में वह चार तरफ़ आबोताब है।
बेताब जिससे ताबे महो आफ़ताब है ॥८९॥

क्यों बाग़ बाग़ खल्क है खुश रोज़गार है।
क्यों दिन ब दिन खुसी से जहां लाला ज़ार है।
नामे खिजा जहाँ से निहाँ एक बार है।
अ़रशे बरीं से ता ब ज़मीं पुरबहार है।

हर रात शबेरात है हर रोज़ ईद है।
नौ रौज़ बारह माह है ग़म ना पदीद है ॥९०॥

पूछा सबब जो इसका तो फ़िलफ़ौर सर झुका।
पीरे खिरद ने कान में सुन कर के यह कहा।
ज़र्रा नहीं निहाँ यह है क्या पूछने की जा।
कौंशेंस फ़िलनि हार अयाँ हैं बयाँ हो क्या।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दश्तो ख़यल में बहर में जंगल में दहर में।
घर घर है शोर शोहरा है खुद शहर शहर में ॥६१॥

एच० एन० मिलर जो साहबे ज़ी शान सरवरी।
करनैल इन्सपेक्टरे जरनल पुलिस जरी।
पंजाव में वहादुरे यकता व बरतरी।
हैं शाहे नज़्मो नस्को कमाले सुख़नवरी।

वरकत से उन की दाद की यह इन्सदाद है।
आबाद मुल्क अ़दल से और खल्क शाद हैं ॥६२॥

क्या शाहे नज़्मो नस्क़ यह आ़लम पनाह़ है।
क्या माहे ओज अ़दल यह अनजुम सिपाह है।
क्या वाह हक़ निगाह यह जमशेद जाह है।
क्या जाह क्या जलाल है क्या बारगाह है।

चरचा है इसके रोब का हर जा अ़मूम में।
शोहरा है शर्क़ों ग़र्ब में और रूसो रूम में ॥६३॥

मैदाँ में आए गर यह सुलेमाने नामवर।
शसदर हो उसको देख सिकन्दर हो दिल में डर।
तन काँप काँप कर हो तहमतन वह बे जिगर।
पाए जफ़र यह दम में ग़ज़नफ़र व क़र्रोफ़र।

रूस्तम सितम से ख़ौफ़ के पुर इज़तिराब हो।
अफ़रासियावोग्यू पै यह फ़तह याब हो ॥६४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और दूसरे जो उनके असिस्टेंन्ट ला जवाब।
क़प्तान हैं नियोबरी साहबे फ़लक जनाब।
फ़ैय्याज़ो क़द्रदाँ व बहादुर करम सुहाब।
पंजाब जिसके दम से है सैराबो फ़ैज़याब।

यह पुर समर शजर वो सरापा कमाल है।
फ़ौजे पुलिस कि साए से जिसके निहाल है॥९५॥

जुरअत में इल्मो फ़ज़्ल में यह बे नज़ीर है।
हिम्मत में ज़हनो अक्ल में माहे मुनीर है।
फ़य्याज है अमीर है इबने अमीर है।
फ़त्ताह बाबे अ़दल है और फ़तहगीर है।

जर्रार है जरी है बहादुर है शेर है।
कर्रार है क़वी है शुआओ दिलेर है॥९६॥

ऐ शेरे नेस्ताने शुजाअ़त व कारे ज़ार।
ऐ नख्ले बोस्ताने शराफ़त वफ़ा शुआ़र।
ऐ बादशाहे मुल्के अमानत बहर दयार।
ऐ नाखुदाए फ़ल्क दयानत फ़लक विक़ार।

अहसनत की सदा है सदा जा बजा तुझे।
तहसीनो आफ़रीं है तुझे महरबा तुझे॥९७॥

है ज़िक्र कूचा कूचा तेरे नेक नाम का।
चरचा है जा बजा तेरे अख्लाक़ आ़म का।
शोहरा है शहर शहर तेरे इन्तज़ाम का।
हिम्मत का नज़्मो नस्क़ का चुस्ती का काम का।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्यों कर न सुनके इसको गवर्नमेन्ट शाद हो।
देहली में यह फ़िसाद हो यह इन्सदाद हो ॥९८॥

यह फ़तहो इन्तज़ाम मुवारिक हज़ूर को।
हुक्काम में यह काम मुबारिक हज़ूर को।
फ़ैजे अनामो नाम मुबारिक हज़ूर को।
इन आम खासो आम मुबारिक हज़ूर को।

इकबाल तेरा वो हो न हो फ़र्क़ बाल का
तुझ पर हुमा हो साया फ़िगन अपने बाल का ॥९९॥

यह फ़तह यह सरूर मुबारिक हज़ूर को।
यह फ़ख़ं पुर व फ़ूर मुबारिक हज़ूर को।
यह नाम दूर दूर मुबारिक हज़ूर को।
यह महनते हज़ूर मुबारिक हज़ूर को।

जो मुन्तजिम अक़ील हैं तुम उनके शाह हो।
दज़दूँ में आफ़ताब सितारों में माह हो ॥१००॥

ज़ाकिर पुलिस के सीग़े में बत्तीस साल से।
फ़ज़लेहुसैनों मरहमते दुल ज़लाल से।
हुक्कामे कद्रदां के तुफ़ैले कमाल से।
अब तक तो वर्क़ चुस्त रहा नेक चाल से।

तौरे फ़लक अब और है और दौर और है।
दौरे फ़लक पै ग़ौर है ग़म और और है ॥१०१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारीख़ तबे ज़ाद मुसन्निफ़

जब के मनज़ूम यह रिसाला हुआ।
बइनायाते नाज़िमे दारीं ।

गरचे तारीख़ हो चुकी थी रक़म।
इब्तदा में मतन में बासद ज़ीं।

पुर शफ़ीक़े अनीस और जलीस।
मख़ज़ने ख़ल्क व ज़ुबदहे कोनीन।

लाला प्रतापसिंह जो हैं मोहसिन।
जानेदिल रूहे तन के राहतो चैन।

इल्मेतारीख़ का है ज़ौक उन्हें।
और है शौक़ मजलिसे हुसनीन ।

हस्बे इरशाद उनके फ़िक्र जो फिर।
बहरे तारीख़ की बरासो यमन ।

कहा हातिफ़ ने ग़ैब से है यह ।
बाइसे यादगारे फ़ज़लेहुसैन ॥
१८७७

तमाम शुद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्तज़ाम नामा बरामद रथ सरावगियान सन् १८७७ का सार

दिल्ली में सन् १८७७ में सरावगियों का रथोत्सव बड़ी धूमधाम और उत्साह के साथ हुआ था। जिसका प्रभाव दिल्ली की समस्त जनता पर अच्छे रूप में पड़ा। चुनाचे दिल्ली के डिप्टीइन्सपैक्टर पुलिस सैयद फ़ज़लहुसैन 'ज़ाकिर' ने देहली पुलिस के असिस्टैन्ट सुपरिटैन्डन्ट जनाब राटन साहब की प्रेरणा और डिप्टीइन्स्पैक्टर प्रथम श्री प्रतापसिंह के समर्थन पर इस महोत्सव का सुन्दर व हृदयग्राही वर्णन उर्दू कविता के रूप में किया। जो उत्सव के पश्चात् ही फैज आम प्रेस दिल्ली में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ। यह तमाम कविता मूल रूप में हिन्दी लिपि में छपाई गई है। हिन्दी पाठकों के लाभार्थ संक्षिप्त हिन्दी सार नीचे दिया जाता है :—

इस कविता के १०१ मुसद्दस यानी (५०५ शेर) हैं। रचियता ने प्रथम पद में भगवद्भक्ति प्रकट करते हुए बतलाया है कि दिल्ली में सरावगियों की रथयात्रा निकलने की हर ओर बड़ी धूम-धाम है। जिसके लिए सरावगियों की ओर से सउत्साह उद्योग हो रहा है। इसका कारण यह है कि रथोत्सव करने की आज्ञा सालों-साल के के पश्चात् मिली थी। स्थानीय सरावगियों में इस पर बहुत हर्ष मनाया जा रहा है। और वे इस उत्सव के निर्विघ्न पूर्ण करने में बहुत तत्पर हैं। उनके मुख पर खुशी छाई हुई है। इसके बरअक्स कुछ लोगों में यह चर्चा है कि रथ का निकलना और नग्न मूर्ति का जगह व जगह फिरना और वैष्णवों को उसका देखना उचित नहीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वे कह रहे थे कि पहले कभी रथ बादशाह के समय में नहीं निकला; और फिसाद अवश्य होगा। कुछ ने यह ज़ोरदार ईरादा प्रकट किया कि दुकानों के खोलने और कारोबार करने से इन्कार कर दिया जाय, और हर कूंचे व बाज़ार में हड़ताल की जाय, ताकि अधिकारी बदनाम हों और सरावगी नाकाम हों। परन्तु जिन लोगों में धार्मिक कट्टरता नहीं थी, बुद्धि और विवेक रखते थे, उनका यह कहना था कि फिसाद में ख़तरा और हानि है, और न्याय का रूप इस बात में है, कि सारी जनता को आज़ादी मिले।

उत्सव की आज्ञा दी जाने पर देहली डिवीजन के लोक प्रिय कमिश्नर करनल डेविस साहब ने जो बड़े न्यायी और विचारशील थे, और श्री स्माईथ साहब डिप्टीकमिश्नर ने उत्सव का बड़ी चुस्ती और बुद्धिमत्ता से इन्तजाम किया। उन्होंने दरबारे आम किया और उसमें हर धनाढ्य, व हर मेम्बर कमेटी, मजिस्ट्रेट और अफ़सराने पुलिस व वैष्णव, और सरावगियों के नेताओं को बुलाकर समझाया और दोनों फरीकों को रज़ामन्द कर लिया। मुसलमानों की सभा इस्लामिया अंजुमन के प्रधान हाजी कुतबुद्दीन ने भी अपनी ओर से एक इश्तिहार जारी किया कि सरकार का रथ निकालने का हुक्म न्याय वाला है, आज़ादी सबको मिलनी चाहिए, मुसलमान साहेबान किसी की प्रेरणा से कोई ऐसा कार्य न करें जो सरकार की आज्ञा के विरुद्ध हो।

आखिर रथ निकलने का दिन आ गया जिसकी शहर में बड़ी धूम थी। जिसकी तारीख २० जुलाई सन् १८७७ शुक्रवार का दिन नियत था। उत्सव की व्यवस्था के लिए स्थानीय पुलिस ने अपने सुपरिटैन्डैन्ट मेजर इवार्ट साहब की देख-रेख में अति सुन्दर कार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किया। पुलिस स्थान-स्थान पर लगा दी जिससे शत्रुओं का दिल टूट गया।

विशाल जलूस के साथ रथ प्रातः काल ६ बजे श्री मंदिर जी हरसुखराय से निकलकर ९ वजे डिप्टीगंज पहुँचना था, जहां से इसे ३ से ६ वजे तक वापिस लौटना था।

उत्सव की सुन्दर व्यवस्था के लिए मार्ग में ५ हल्के बनाम A. B. C. D. E. निश्चित किये गए। हर हल्के में बड़े-बड़े अधिकारी नियत किये गये जिन पर अपने-अपने हल्कों की जिम्मेदारी सौंपी गई। ताकि हर एक कार्य सुन्दर रूप से हो। नगर में स्थान-स्थान पर काली वर्दी और काली पेटियां डाले हुए व हाथों में डंडे संभाले हुए सिपाही वड़ी चुस्ती के साथ खड़े हुए थे।

अम्बाला पुलिस के डिप्टीइन्स्पैक्टर करनैल बेली साहब घोड़े पर सवार जलूस के साथ थे जो स्थान-स्थान पर घूम फिर कर प्रत्येक व्यवस्था की देख-भाल कर रहे थे। इस कार्य से जनता के हृदय पर अच्छा प्रभाव पड़ा, और विरोध या झगड़े करने की किसी की हिम्मत न हो सकी। विभिन्न हल्कों में निम्न प्रकार व्यवस्था की गई:—

प्रथम हल्के 'A' में मन्दिर जी से खूनी दरवाजे तक जनाब राटन साहब तथा मेडली साहब व मुख्तारसिंह, दो इन्स्पेक्टरान पुलिस तथा मुन्शी हरस्वरूप, धर्मरूप व प्यारे जां, महोम्मदनजीर, १८ सारजेण्ट, १० सवार और १५८ सिपाही नियत थे।

दूसरे हल्के 'B' में खूनी दरवाजे से घंटा घर तक मिस्टर जोविन्स फोर्ट, सरदार अतरसिंह दो अधिकारी तथा १४ सारजण्ट व १२० सिपाही थे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीसरे हल्के 'C' में घंटा घर से मस्जिद फतहपुरी तक अम्बाला पुलिस के असिस्टैन्ट मिस्टर बी० मैकलेड साहब तथा मुन्शी गुलाम व खादिम अब्बास, व इस कविता के रचियता फ़ज़लहुसैन व अमरसिंह इन्स्पेक्टराने पुलिस व ८ सारजण्ट और ७४ सिपाही थे।

चौथे हल्के 'D' में फतहपुरी से लाहोरी दरवाजे तक अम्बाला पुलिस के मीर महोम्मदरशीद तथा मिस्टर मैकनबहुसैनी खां, दो इन्सपेक्टरान पुलिस और हिम्मतसिंह व रामसिंह डिप्टीइन्स्पक्टराने पुलिस, १० सारजण्ट और १०० सिपाही थे।

पांचवें हल्के 'E' में लाहोरीगेट से डिप्टीगंज तक मिस्टर होमन असिस्टैन्ट पुलिस तथा करनाल पुलिस के एक इन्स्पेक्टर व दो डिप्टीइन्स्पेक्टर श्री चुन्नीलाल व अमानतखां और १८ सारजण्ट, २६ घुड़सवार १५६ सिपाही थे।

यह बात उल्लेखनीय है कि पांचों हल्कों में पुलिस अधिकारियों के अतिरिक्त आनरेरी मजिस्ट्रेट भी नियत थे। जिनकी कमर में सुनहरी पड़तले पड़े हुए थे। इनकी सूंची हल्केवार निम्नलिखित है:—

प्रथम हल्के में ला० रम्मीमल और महुम्मद जहीरुद्दीन।

द्वितीय हल्के में ला० साहबसिंह, सफ़दरहुसैनखां, मुन्शी जीवनलाल, ला० श्रीनिवासदास।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय हल्के में कुंवर गोपालसिंह व महबूबबख्श खां।

चतुर्थ हल्के में निजामुद्दीन खां और मुन्शी प्रेम नरायन।

पंचम हल्के में मीर कासमअली, मिर्जा सुलेमान शाह थे।

इस समय देहली के तहसीलदार अमीर अली थे जो उत्सव की व्यवस्था में दत्तचित्त थे। मिर्जा अलाउद्दीन नवाब लुहारू जिनको सरकार से फखरूद्दौला का खिताब था ने कमिश्नर, देहली को एक पत्र लिखा कि यदि उनकी आज्ञा हो तो वह (नवाब लुहारू) इस व्यवस्था में सहायक बनने के लिए उत्सव पर उपस्थित हों। आज्ञा प्राप्त होने पर बड़ी आन, बान और शान से उत्सव पर उपस्थित हुए, जिन्हें देखकर हर झगड़ालू का दिल बैठ गया। प्रतिष्ठित सरावगी भी हल्केवार इसी प्रकार नियत किए गये। ताकि जलूस के समय विभिन्न हल्कों में उनके द्वारा कार्य का संचालन भली प्रकार हो सके। उनके कंधों पर निशान के तौर पर गुलाबी दुपट्टे थे और वह बड़े हर्ष और उत्साह के साथ जलूस की व्यवस्था में लगे हुए थे। जलूस के मार्ग में २० कटघड़ बनाये गये थे। पहले से पांच तक पास-पास कटघड़ थे। इनकी व्यवस्था के लिए मुन्शी रंगीलाल, ला० देवीदास, ला० चिरंजीलाल ला० जानकीदास नियत थे। छठे, सातवें, आठवें कटघड़ की व्यवस्था के लिए श्री वृन्द्रावन व ला० जानकीदास के सुपुर्द थी। नवमें दसमें कटघड़ में मुन्शी उमरावसिंह व ला० हजारीमल व्यवस्थापक थे। ग्यारहवे में लाला वांकेराय और ला० मोतीलाल थे। बारहवें में ला० सम्मनलाल व ला० जोरावरमल थे। तेरहवें चौदहवें कटघड़ में ला० गनेशीलाल व मुन्शी श्योसिंहराय थे। पन्द्रहवें कटघड़ में श्री मथुरादास व लाला द्वारकादास थे। सोलहवें सतरहवें कटघड़ में जो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पास-पास थे मुन्शी जगदीश, और ला० तनसुखराय, ला० मेहरचन्द्र थे। अठारहवे से बीस कटघड़ तक ला० बल्देवसिंह रईस, ला० धर्मदास, ला० अजुध्या प्रसाद, ला० जौहरीमल और धर्मदास (द्वितीय) थे।

रथ के साथ मेजर इवार्ट साहब और उनके बराबर मिस्टर हिमल्टन थे। डिप्टीइन्स्पैक्टर प्रथम प्रतापसिंह भी साथ थे। जिनकी जेब में पचास वारन्ट, ५० समन मौजूद थे ताकि जो कोई झगड़े पर उतारू हो उसके पकड़ने में रंचमात्र भी देर न हों। इनके अतिरिक्त कान्हासिंह व शाहवाज खां प्रथम सारजण्ट और बीस बन्दूक वाले सिपाही और तीन हथियारों सहित सारजण्ट थे, ताकि आवश्यकता पड़ने पर फौरन रेडी हो जांय। दो सारजण्ट व बीस सिपाही उनके साथ हाथों में तलवारें, डंडे और हथकड़ी लिए हुए थे, ताकि अमनों अमां में फर्क डालने वाले और गड़बड़ी करने वालों को फौरन पकड़ लिया जाय।

जलूस के समय बाजारों, कूंचों और छतों पर बड़ी भारी संख्या में जनता उपस्थित थी। मार्ग में हर दरवाजे पर चुस्त पहरा था और बिदून सुर्ख या काले टिकट या पास के कोई मार्ग में रुकावट नहीं कर सकता था। बाजार में लैन बन्दी थी और पास के गली व कूंचों में गश्त जारी था। ताकि अगर कहीं कुछ गड़बड़ हो तो फौरन खबर पहुँच जाय।

रथ के निकलने के नए-नए सामान थे। भजनीक और नृत्य करने वाले भी नए-नए थे, जिनके सुन्दर वस्त्रों से जलूस की शोभा बढ़ रही थी। आगे अंगरेजी बाजा था, उसके पीछे एक सजा हुआ हाथी था, जिस पर झंडे वाले बैठे थे और उसके पीछे चार सांडनियां थी जिन पर निशान वाले सवार थे। फिर तीस झंडे वाले बालक थे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और फिर ताशे वाला था। फिर एक बंगला सुनहरी नक्कारे वाला और उसके पीछे सजे हुए पन्द्रह घोड़े थे। फिर ताशा मरफा व एक सुन्दर गुलाल बाडी जिसके पीछे अंगरेजी बाजों की कत्तार, पांच सोने की सुन्दर पालकियां, लकड़ी के तीन रथ व घोड़े थे जिनको अजीब शोभा थी। तीन लकड़ी के सुनहरी हाथी, और फिर तीन रथ बैल के बिना सवार और फिर सरावगिओं का समूह था। रोशन चौकी पर भजनीक व नृत्य करने वाले बड़ी सुरीली बाणी में भजन गा रहे थे। इसके पश्चात श्री पार्श्वनाथ जी का सुनहरी व सुशोभित रथ था जिसके साथ बड़ी तादाद मेंस रावगी थे। इस प्रकार जलूस के साथ अत्यन्त रौनक, सुन्दर सामान व बड़ा प्रकाश था। रथ बड़ी धूम-धाम से गया और आया। सुन्दर व्यवस्था से कहीं कोई झगड़ा या उपद्रव नहीं हुआ।

जिस समय रथ अपने नियत स्थान पर पहुँचा वहां पर एक विचित्र घटना हुई। यद्यपि आषाढ़ का महीना था, स्थान-स्थान पर खुश्की थी, गर्म धूप कयामत बरपा कर रही थी परन्तु एकाएक बादल उमड़ आए, अंधेरा हो गया और बड़े ज़ोर की वर्षा हुई। जिससे गर्मी उड़ गई, गर्दो-गुबार दूर हो गया। गोया मौसमे बहार आ गया। इससे प्रतीत होता था कि बादल रथ पहुँचने की पहले से ही प्रतीक्षा कर रहे थे। वर्षा से गर्मी दूर हो गई और पृथ्वी पर से धूल तथा मिट्टी साफ हुई और उस पर ऐसी शोभा आई जो देखने के योग्य थी। सूर्य भी उसे देखकर लज्जित हो जाय। ज़ोर की वर्षा से स्थान-स्थान पर पानी बहने लगा और हर वाटिका स्वर्ग के समान खिल उठी। उस समय हर सरावगी के यह शब्द थे कि यह सब घटना रथोत्सव की बरकत है। वैष्णव बन्धु भी यह कहते थे कि वर्षा जनता के पापों को धोने आई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार उत्सव की व्यवस्था सुन्दर रूपेण समाप्त हुई। जनता का एक बड़ा समूह (अम्बोह) इस उत्सव में सम्मिलित था। बाजारों व कूंचों में भी अपारसंख्या में जनता उपस्थित थी किसी भी स्थान पर कोई झगड़ा या उपद्रव नहीं हुआ और किसी के एक पैसे की भी हानि न हुई। इस उत्सव की इस प्रकार निर्विघ्न समाप्ति तथा सफलता पर प्रसन्न होकर पंजाब प्रान्त के लैफ़्टीनेन्ट गवर्नर ने शिमले से कमिश्नर देहली को एक तार भेजा जिसमें इस उत्सव की सुन्दर व्यवस्था पर उन्हें, तथा म्युनिस्पिल कमेटी के सभासदों आनरेरी मजिस्ट्रेटों, डिप्टी कमिश्नर तथा पुलिस को बधाई दी गई।

अब उत्सव के इस वर्णन की समाप्ति पर इस छोटी सी कविता के रचियता फ़ज़लहुसैन नम्रतापूर्वक सब प्रतिष्ठित सज्जनों की सेवा में निवेदन करते हैं कि दिल्ली में इस रथोत्सव की आज्ञा के लिए हर वर्ष प्रेरणा पत्र भेजे जाते थे। परन्तु अन्य सम्प्रदाय वालों की कस-रत थी और उनको उत्सव के निकलने पर विरोध था और उनका यह विचार था कि रथ के निकलने की आज्ञा से झगड़ा होने की संभावना है। इस कारण आज्ञा मिलने में रुकावट होती रही। उस समय के गवर्नर जनरल लार्ड लिटन साहब और पंजाब के लेफ़्टीनेन्ट गवर्नर मिस्टर एजर्टन जो बड़े न्यायवान थे और जिनका विचार था, कि न्याय चाहता है, कि सारी जनता को समान रूप से अपने धर्म उत्सवों के करने की स्वतन्त्रता प्राप्त होनी चाहिए। इस विचार के अनुसार इस रथोत्सव की आज्ञा व व्यवस्था हुई। पंजाब के इन्स्पैक्टर जनरल पुलिस करनल एच० एन० मिलर साहब व इनके असिस्टैन्ट कप्तान न्योवरी साहब की सुन्दर योजना से यह कार्य इस प्रकार सुन्दर रूप

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से सम्पन्न हुआ जिस पर सरकार और जनता दोनों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

इस पुस्तक के अन्त में रचियता ने फारसी में सन् इन शब्दों में लिखा है—

'कहा हातिफ ने गैब से है यह "बाइ से याद गारे फ़ज़लेहुसैन"

जिससे सन् १८७७ निकलता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृपया इस ग्रन्थको निम्नांकित तिथि पर या
लौटा दें। विलम्बसे लौटानेपर ५
प्रतिदिन दण्ड देना होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi